अघोरानंद और
बलात्कारी प्रेत

अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत

पूर्वपीठिका

श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है,उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

मैं यानि अघोरानंद **26** वर्षीय एक गृहस्थ युवा था। जो शासकीय सेवा में था और छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग में रहता था। मेरी पत्नी का युवावस्था में ही देहांत हो गया। उसके देहांत के बाद मैं बेहद अकेला पड़ गया। कुछ समय बाद मेरे जीवन में अजीब अजीब सी घटनाएं घटी। मेरे गुरु ने मुझे अघोर दीक्षा प्रदान की और मुझे अघोरानंद नाम दिया। जिसके बाद मेरा साधनात्मक जीवन प्रारंभ हुआ।

साधनात्मक जीवन में मुझे अलग-अलग प्रकार के अनुभव मिले। जिसमें कई बातें ऐसी हैं जो नहीं लिखी जा सकती और कई बातें ऐसी हैं जो अविश्वसनीय है। बहुत सारी बातें ऐसी हैं जो बेहद रोमांचक हैं और जिसे पढ़ने में आपको आनंद भी आएगा। ऐसी ही कुछ घटनाओं को गुरु के आशीर्वाद से और भगवती महानील सरस्वती की कृपा से शब्द श्रंखला में बांधने का प्रयास किया है जो आपको पसंद आएगा।

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , इसलिए इसके किसी भाग

का अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुक्सान हो सकता है |

अंत में .....यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर “अमस”

anilshekhar.amas@gmail.com

By Anonymous

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत

विषय वस्तु

प्रसंग

माया से मुलाक़ात

माया की परेशानी

बुधिया और माया की जवानी

बुधिया का प्रेत

बुधिया की आजादी

गांव का बैगा - जंगली

चमेली की वापसी

डाकिनी साधना

घोडाटोला का मसान और डाकिनी

बुधिया की आखिरी रात

By Anonymous

अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत

प्रसंग

सुनी हुई एक घटना पर आधारित यह कथा मैं आप लोगों के सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसकी वास्तविकता या सत्यता या प्रामाणिकता पर मैं कोई टिप्पणी नहीं करना चाहूंगा। आप लोग इसे रहस्य कथा के रूप में पढें और अपनी बहुमूल्य टिप्पणियां और सुझाव मुझे भेजें ताकि मैं और बेहतर लिख सकूं।

मैं अर्थात अघोरानंद एक युवा गृहस्थ, जो कि अपने गुरु के सानिध्य में अघोर साधनाओ में संलग्न हुआ | जिसके बाद में गुरु के आदेश से वापस गृहस्थ जीवन में आ गया | इस पूरी कहानी को जानने के लिए आप पढ़ सकते हैं तांत्रिकअघोरानंद और मेरी दूसरी रचना अघोरानंद की अप्सरा॰

तंत्र साधनाओं का क्षेत्र बहुत जटिल होता है और दूसरों को नुकसान पहुंचाने के लिए जो काले तंत्र का प्रयोग होता है वह थोड़ा आसान भी होता है और सरलता से हो भी जाता है।

यह प्रकृति का नियम है कि निर्माण हमेशा समय लेता है और विध्वंस बड़ी आसानी से हो जाता है।

गृहस्थ जीवन में आने के बाद कई लोग मुझे मिले | जिनको अलग अलग प्रकार की समस्याएं थी और वे उस से जूझ रहे थे। ऐसी समस्याएं जिनका हल सामान्य प्रक्रियाओं से नहीं निकल पा रहा था |

स्पष्ट शब्दों में कहें तो ऐसी समस्याएं जो आम आदमी की समझ से परे थी और विभिन्न प्रकार की तंत्र क्रियाओं के द्वारा या तो उनके शत्रुओं के द्वारा या परिवार के सदस्यों के द्वारा उनके उपर की गयी थी |

ऐसी ही एक समस्या पर आधारित है यह कथा.....

By Anonymous

माया से मुलाक़ात

हमारी कहानी की नायिका है माया। माया लगभग 35 साल की महिला है। माया से मेरी मुलाकात बड़े ही अजीब हालात में हुई थी। अजीब हालात में मुलाकात का मतलब .... वाकई बेहद अजीब मुलाकात....

मैं बस से रायपुर जो कि छत्तीसगढ़ की राजधानी है जा रहा था। बस में मेरे बगल वाली सीट पर एक महिला बैठी हुई थी | जो समीप ही किसी गांव की रहने वाली थी | हम उस गांव का नाम घोडाटोला मान लेते हैं। वह महिला घोडाटोला से रायपुर जा रही थी। जब कंडक्टर ने टिकट के लिए पैसे मांगे तो वह घबराने लगी। उसकी घबराहट देखकर मुझे लगा उसे किसी प्रकार की परेशानी है। मैंने उसका भी टिकट कटवा दिया। टिकट कटवा देने के बाद उसके चेहरे पर आश्वस्ति के भाव उभरे। फिर हम दोनों के बीच बातचीत होने लगी। उसने बताया कि रायपुर में उसका भाई रहता है। उसी से मिलने जा रही थी लेकिन उसका बटुआ कहीं गिर गया था। जिसकी वजह से वह परेशान थी।

रायपुर बस स्टैंड पर हम लोग उतरे।
मैंने उससे पूछा - कहां जाना है ?
उसने बताया – मेरा भाई देवेंद्र नगर में रहता है।
मुझे भी उसी तरफ जाना था | मैंने उसे घर छोड़ देने की पेशकश की। जिसे उसने स्वीकार कर लिया। हम दोनों रिक्शा में बैठकर चल पड़े। भाई के घर पहुंचे तो वह घर पर नहीं था। घर में केवल एक नौकर था। वह उस महिला को पहचानता था। उसने हमें अंदर बैठाया महिला ने चाय नाश्ता कराया फिर मैंने इजाजत मांगी और अपने काम पर निकल पड़ा।

वापसी फिर बस से होनी थी। शाम के लगभग 7:30 बजे होंगे मैं पंडरी बस स्टैंड से बस पकड़ कर जाने की सोच रहा था। इसलिए बस स्टैंड पहुंचकर हल्का भोजन किया और सिगरेट लगाकर कुछ लंबे कश मारे और बस में चढ़ गया।

खिड़की वाली सीट पकड़ कर मैंने आंखें मूंद ली और दिनभर की थकावट की वजह से मुझे जल्दी झपकी आ गई। करीब 10-15 मिनट बाद बस चलने की आवाज आई। बस आधी भरी थी। काफी जगह थी। मेरे बगल वाली सीट अभी भी खाली थी। इसलिए मैं बड़े आराम से पसरा हुआ था और झपकी का आनंद ले रहा था।

टाटीबंध के पास बस रुकी और थोड़ी देर में कोई मेरी सीट पर आकर बैठ गया। बस फिर चल पड़ी और मैंने अपने सहयात्री को देखा और उसने भी मुझे देखा। यह वही महिला थी जो मुझे सुबह मिली थी। हम दोनों एक दूसरे को देख कर मुस्कुराए | तब तक कंडक्टर टिकट काटने के लिए आ चुका था। अबकी बार उसने मेरी टिकट के पैसे दिए और कहा – अब हिसाब बराबर।

हम दोनों हंस पड़े। फिर बातों का सिलसिला चल निकला। उसने मुझसे पूछा कि मैं क्या करता हूं। मैंने बताया कि सरकारी नौकरी में हूं। रायपुर कुछ काम से आया था।

By Anonymous

मेरे हाथ में मेरे गुरु का दिया हुआ अघोर कड़ा था और गले में रुद्राक्ष के बड़े-बड़े दानों की माला जो सामान्य तौर पर पहना करता था।
उसकी नजर मेरी माला पर पड़ी और उसने मुझसे पूछा - सिर्फ सरकारी नौकरी करते हैं या और कुछ भी करते हैं ? मैंने इंकार में सर हिला दिया।
उसने माला की तरफ इशारा करते हुए पूछा - ऐसी माला तो सीखे पढ़े लोग ही पहनते हैं। मैं उसकी बात का मतलब समझ गया।

छत्तीसगढ़ में सीखे पढे होने का मतलब होता है कि संबंधित व्यक्ति तंत्र साधनाओं के विषय में जानकारी रखता है। मैं मुस्कुरा दिया। वह भी समझ गई कि मैं इस विषय पर बात नहीं करना चाहता।

उसने आगे चर्चा छेड़ी और चर्चा का विषय था भूत प्रेत। एक ऐसा विषय जिस पर सामान्य तौर पर कोई चर्चा करना नहीं चाहता और विशेष तौर पर कोई महिला तो बिल्कुल नहीं। इसलिए मुझे कुछ अजीब सा लगा और कुछ आभास भी हुआ कि शायद इसे कुछ परेशानी है।

दो दो बार मिलने का मतलब हो सकता है महामाया का कोई निर्देश हो। यह सोच कर मैंने उसे बताया कि मैं एक साधक हूं और भूत प्रेत के अस्तित्व को स्वीकार करता हूं।

यह सुन कर उसके चेहरे पर संतुष्टि के भाव उभरे। उसने मुझे अपने घर चलने का निमंत्रण दिया और बताया कि वह कुछ इसी प्रकार की परेशानी में है और अगर आप कोई हल निकाल सके तो मेहरबानी होगी।

रात का समय था मुझे अकेली महिला के साथ जाने में थोड़ी झिझक भी हो रही थी। उसके चेहरे के भाव बता रहे थे कि वह किसी बड़ी परेशानी में है और रास्ता ढूंढ रही है। मैंने आंखें बंद की , अपने गुरु को याद किया और सहमति में सिर हिला दिया।

कुम्हारी पार करने के बाद जब चरोदा आया तो वह अपना सामान समेट कर उतरने लगी। मुझे भी साथ चलने के लिए कहा। मेरी समझ में नहीं आया कि इतनी रात गए चरोदा में उतरकर वह कहां जाएगी।

खैर मैं उसके साथ नीचे उतरा। जहां पर हम लोग उतरे थे वहीं पर उसका पति बोलेरो लेकर खड़ा था। मुझे देखकर उसने प्रश्नवाचक निगाहों से अपनी पत्नी की तरफ देखा। वह उसके कान में कुछ फुसफुसाई।

पति लगभग 40 45 साल का व्यक्ति था और उसके कपड़े तथा गाड़ी बता रहे थे कि आर्थिक रूप से संपन्न परिवार है । पत्नी ने उसे मेरे विषय में बताया तो वह आगे बढ़ा, उसने मुझसे हाथ मिलाया और अपना नाम बताया। मैंने भी अपना नाम बताया। उसने मुझे ऊपर से नीचे तक ताड़ने वाली नजरों से देखा । जो कि आमतौर पर लोग देखते ही हैं।

उसे यह शायद यकीन नहीं हो रहा था कि एक जवान युवक वास्तव में कुछ सीखा पढा हो

सकता है।

उसने मुझसे सीधे पूछ लिया - क्या आपको इसने कुछ बताया है।

मैंने कहा - कुछ नहीं बताया। कुछ परेशानी है और मदद चाहिए ऐसा कहा।

उसने स्पष्ट मेरे मुंह पर ही कह दिया - आपकी उम्र देख कर मुझे नहीं लग रहा कि आप इस मामले में कुछ कर पाओगे क्योंकि समस्या थोड़ी गंभीर है। कई बैगा लोग आकर असफल हो घर लौट चुके हैं।

मैंने कहा - मैं उम्र में छोटा हूं, लेकिन अपने गुरु अखिलेश्वरानंद जी की कृपा से सक्षम हूं कि कुछ समस्याओं को हल कर सकूं | लेकिन यह तभी संभव है जब मुझे पूरी बात पता चलेगी और मैं वह स्थान देख पाऊंगा जहां पर समस्या है। उसके बाद ही मैं आपको यह स्पष्ट कर पाऊंगा कि समस्या समाधान करने की मेरी क्षमता है या यह मेरी क्षमता से बाहर है।
मेरी बातें सुनकर और मेरे गुरु का नाम सुनकर शायद उसे कुछ विश्वास जमा, फिर उसने अपनी पत्नी से चर्चा की और हम तीनों बोलेरो में बैठ कर उसके गांव घोड़ा टोला की ओर चल पड़े। लगभग रात के 11 बजे हम लोग गांव पहुंचे। वहां पहुंचने के बाद मुझे घर में अजीब सा भारीपन लगा जो कि आम तौर से तब होता है जब किसी पैशाची शक्ति की उपस्थिति हो।
घर के अंदर घुसते ही मेरे मुख से अपने आप पाशुपत मंत्र का प्रस्फुटन होने लगा। पाशुपतास्त्र मंत्र भगवान शिव का एक ऐसा मंत्र है जो सभी प्रकार की इतर योनि की बाधाओं को दूर करने के लिए सक्षम है। उस मंत्र का उच्चारण होते होते मुझे वातावरण की भारीपन में थोड़ी सी कमी महसूस हुई। दोनों पति-पत्नी भी अजीब नजरों से मेरी तरफ देख रहे थे क्योंकि अचानक से मेरे मुंह से इस प्रकार के मंत्र की उम्मीद उन्होंने भी नहीं की थी।

वातावरण का भारीपन धीरे-धीरे कम हुआ शायद जो शक्ति वहां पर मौजूद थी उसने भी मुझे ताडा और उसे वहां से हट जाना बेहतर लगा।
उन्होंने खाने के लिए पूछा मगर मैंने मना कर दिया। चाय पीने के बाद पति पत्नी और मैं चर्चा के लिए बैठे।

माया ने अपना दुख बताना चालू किया आगे की बात उसी के शब्दों में.....

माया की परेशानी

माया ने बताना चालू किया - रात को पति मेरे साथ नहीं सो सकता है क्योंकि अगर वह मेरे साथ बिस्तर पर लेट जाए तो रात को उसका पूरा शरीर अकड़ जाता है और कोई उठाकर उसे नीचे फेंक देता है। उसका गला दबाने लगता है अर्थात कुछ ना कुछ ऐसा होता है कि वह उस कमरे में नहीं सो पाता।

मैंने पूछा - ऐसा कितने समय से हो रहा है ?

माया ने बताया - लगभग 1 साल से ऐसा ही हो रहा है। इसलिए पति दूसरे कमरे में सोता है और मैं दूसरे कमरे में।

माया आगे बताने लगी - जैसे-जैसे रात आने लगती है | मेरे कमरे का दरवाजा बंद हो जाता है | मेरे शरीर के वस्त्र अपने आप एक-एक करके अलग उठ जाते हैं। मुझे ऐसा लगता है जैसे कोई एक एक करके मेरे वस्त्र उतार रहा हो लेकिन कोई दिखाई नहीं देता है। वस्त्र उतारते तक मुझे ऐसा लगता है जैसे किसी ने मुझे जोरो से पकड़ रखा हो। मैं कितनी भी कोशिश कर लूं जोर लगा लू , लेकिन वह हाथ मुझे इतनी ताकत से पकड़े रहते हैं कि मैं कुछ भी नहीं कर पाती। एक-एक करके सारे वस्त्र निकलकर में निर्वस्त्र हो जाती हूं। उसके बाद मुझे ऐसा लगता है जैसे मुझे निर्वस्त्र अवस्था में चारपाई से बांध दिया गया गया हो। मेरे दोनों हाथ ऊपर की ओर होकर बिस्तर से चिपक जाते हैं और दोनों पैर अपने आप फैल जाते हैं।

उसके बाद कोई अशरीरी शक्ति, जो मुझे दिखाई नहीं देती, वह मेरे शरीर से खेलने लगती है। मुझे वक्षस्थल पर और शरीर के अन्य अंगों पर बेदर्दी से मसले जाने की अनुभूति होती है। यह स्थिति काफी देर तक रहती है | इस दौरान मेरे शरीर के अंगों पर नीले नीले निशान होने लगते हैं। दर्द के मारे मेरी चींख निकलना चाहती हैं, लेकिन निकल नहीं पाती क्योंकि मेरा मुह किसी अज्ञात ताकत से बंद हो जाता है। उसके बाद वह मेरे शरीर में प्रवेश कर जाता है | बुरी तरह से मेरे शरीर को झिंझोड़ता है। उसके शरीर का आभास में महसूस कर पाती हूं | किसी जंगली जानवर की तरह कोई साया मेरे शरीर के साथ टकरा रहा है। यह मुझे महसूस होता है। मेरे हर अंग को मसलने और मरोड़े जाने का आभास मुझे होता है।

इतना बताते बताते उसका पूरा चेहरा पसीने पसीने हो गया | पानी पीकर उसने फिर बोलना चालू किया - यह प्रक्रिया रात के 12 बजे से चालू होकर सुबह 4 बजे तक जारी रहती है। सुबह 4 बजे मेरी स्थिति ऐसी हो जाती है, जैसे मेरे शरीर से पूरे प्राण बाहर निकल रहे हो। मुझे उसी तरह लस्त पस्त हालत में छोड़कर वह अदृश्य शक्ति गायब हो जाती है। मेरी हालत ऐसी हो जाती है कि मैं बिस्तर से उठ तक नहीं पाती। सुबह 6 बजे तक उसी प्रकार निर्वस्त्र अवस्था में मैं पड़ी रहती हूं। 6 बजते बजते फिर मेरे शरीर में ताकत आने लगती है। उसके बाद बड़ी मुश्किल से शक्ति जुटाकर अपने कपड़े पहनती हूँ

और फिर वापस दिन के कार्य में जुट जाती हूँ । दिन भर खेती के कार्य करने और सभी प्रकार के गृहस्थी के कार्यों के बाद भी मुझे इतनी थकावट नहीं होती जितनी रात के इस अवांछित क्रियाकलाप से होती है ।

इस अशरीरी संसर्ग के चलते मेरा शरीर लगातार कमजोर होता जा रहा है | दिन में भी कई बार मुझे ऐसा लगता है कि चक्कर आ रहा है । मेरा पूरा शरीर धीरे-धीरे सिकुड़ता जा रहा है । ऐसा लगता है जैसे मेरे शरीर से उसकी प्राणशक्ति खींची जा रही हो । कई बार मुझे लगता है कि अब मैं ज्यादा दिन जीवित नहीं रह पाऊंगी । कई डॉक्टरों के पास इलाज कराने गए लेकिन सभी टेस्ट नार्मल निकले । उन्होंने भी विटामिन की गोलियां देकर वापस कर दिया । दिन भर मेरी स्थिति सामान्य रहती है | मैं सभी काम करती हूं , लेकिन जैसे-जैसे रात आने लगती है, मैं बेचैन हो जाती हूँ .....

मुझे घबराहट होने लगती है ..

आने वाले संकट की बात सोच सोच कर मुझे घर से भाग जाने की इच्छा होती है ...

लेकिन शाम होने के बाद मैं घर की देहरी भी नहीं लांघ सकती क्योंकि डेहरी के उस पार मेरे पाँव जा ही नहीं पाते । यहां तक कि मुझे शौच भी शाम के पहले ही कर लेना होता है । शाम के 6 से सुबह के 4 बजे के बीच मैं घर से बाहर जा ही नहीं सकती । अगर जाने की कोशिश करूं तो पैर में इतनी जोर से दर्द होता है कि, मुझे मजबूरन वापस आना पड़ता है ।

मैंने उससे पूछा - फिर तुम आज रायपुर बाहर कैसे गई ? अभी तो काफी रात हो गई तुम्हारे आते आते ।

माया ने कहा - देहरी से बाहर ना निकलने की मजबूरी केवल गांव में रहने पर ही होती है | गांव से बाहर निकलते ही इस प्रकार की कोई समस्या नहीं होती । गांव से बाहर जाने पर रात को इस प्रकार की परेशानी भी नहीं होती । इसलिए अब हम लोग यह गांव छोड़ने का सोच रहे हैं । जमीन मकान दुकान सब यही है । इस को छोड़कर जाने का मतलब बहुत बड़ा नुकसान है | लेकिन आज की स्थिति में हमारे पास कोई दूसरा रास्ता नहीं है.....

इतना सब सुनने के बाद मेरी समझ में आ गया था की यह किसी प्रकार की प्रेत बाधा है | वह प्रेत माया के साथ शारीरिक संबंध बना रहा है | इसलिए पति को साथ में सोने नहीं देता है । प्रेत एक बेहद शक्तिशाली पैशाचिक शक्ति है, जो आसानी से बस में नहीं आती है ।

मैं अपने कार्यालयीन काम से रायपुर गया था | इसलिए मेरे पास अपना तांत्रिक सामग्री वाला झोला नहीं था , जिसमें इस प्रकार के कार्यों में काम आने वाली आवश्यक सामग्री रखी होती है । इसलिए मैं कोई प्रयोग करने की स्थिति में नहीं था । हां, वस्तुस्थिति अवश्य जान सकता था ।

अब यह पता लगाना था कि यह प्रेत आया कैसे ? क्योंकि प्रेत योनि सामान्य रूप से किसी के ऊपर हावी नहीं होती । प्रकृति हर योनि अपने अपने नियम और सीमाओं में बंधी हुई

होती है। सामान्यतः कोई भी योनि अपनी सीमा का उल्लंघन नहीं करती । इस प्रकार के उल्लंघन के लिए कुछ ना कुछ ऐसा हुआ होगा, जो उसे आमंत्रित करें।

यह जानने के लिए मेरे पास ध्यान लगाकर महामाया से जानकारी प्राप्त करने के अलावा कोई रास्ता नहीं था।

मैंने माया के पति को इस बारे में बताया - यह प्रेत बाधा है और इसे दूर करने के लिए कुछ सामग्रियों की आवश्यकता पड़ेगी। एक हवन करना पड़ेगा जो कि अभी रात में संभव नहीं है | अगर आप चाहे तो मैं कल आकर कर सकता हूं।

शायद काफी बाबाओं के पास वह पैसा गंवा चुके थे। इसलिए उन्होंने सीधे पूछा - कितना खर्चा है।

मैंने हिसाब लगाकर बताया – पाँच हजार के आसपास खर्चा आएगा।

उन्होंने फिर पूछा - और आपका ?

मैंने कहा - सब मिलाकर ₹5000 खर्च आएगा।

पति दुखी स्वर में बोला - अभी तक साढे पांच लाख से ज्यादा खर्च कर चुका हूं , लेकिन समस्या वैसी की वैसी है। इसलिए मुझे जल्दी किसी पर विश्वास नहीं होता, लेकिन आपकी बातें सुनकर मुझे ऐसा लग रहा है कि आप शायद इस समस्या का हल निकाल पाएंगे।

मैंने कहा - मैं ऐसा कोई वादा तो नहीं कर सकता लेकिन महामाया की कृपा रही तो सब ठीक हो जाएगा।
मैंने भागीरथी जी को बताया कि मैं एक अलग कमरे में रहना चाहूंगा जिससे बाकी रात को होने वाली घटनाओं के तह तक पहुंच सकूं। उन्होंने मुझे एक अलग कमरा दिया और मैं उस कमरे में चला गया। अब प्रेत के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए ध्यान लगाकर मैंने कपालिनी को याद किया।

कपालिनी एक ऐसी शक्ति होती है जो विभिन्न प्रकार के रहस्यों को जानने और बताने में सक्षम होती है कपालनी सूक्ष्म रूप में मेरे सामने प्रकट हुई मैंने उसके सामने प्रेत के विषय में जानकारी की इच्छा रखी और वह बताने लगी……

बुधिया और माया की जवानी

लगभग 20 साल पहले की बात थी घोड़ा टोला के बलराम साहू के पास 50 एकड़ खेत था । वह गांव का सबसे संपन्न किसान था | गांव में सभी उसका सम्मान करते थे और उसकी इकलौती बेटी थी माया ।

माया उस समय 15 साल की थी । संपन्न परिवारों के बच्चे ऐसे भी सुंदर दिखते हैं और शारीरिक रूप से भी जल्दी विकसित हो जाते हैं, माया भी अपवाद नहीं थी । जवानी की ओर बढ़ते हुए उसके कदम और शरीर में हो रहा उन्मत्त विकास दोनों मिलकर उसे किसी जंगली झरने की तरह उन्मुक्त और सुंदर बना देते थे । वह पूरे गांव में कुदती फिरती । सबसे बड़े दाऊ की बेटी थी । इसलिए किसी की हिम्मत नहीं थी कि उसे हाथ लगा सके ।

बुधिया 16 साल का, लगभग 6 फीट का, हट्टा कट्टा, बुलंद शरीर वाला, युवक था । माया और बुधिया एक ही क्लास में पढ़ते थे । इसलिए दोनों की अच्छी जमती भी थी । बचपन से साथ में पढ़ते खेलते दोनों जवानी की दहलीज तक आ चुके थे । जहां माया गांव के सबसे बड़े दाऊ की बेटी थी, वही बुधिया अपनी गरीब विधवा मां का अकेला बेटा था । वह स्कूल से आने के बाद माया के घर में काम करता था । उसकी मां भी माया के घर में ही बर्तन चौका से लेकर सारे काम करती थी । कुल मिलाकर उनकी रोजी-रोटी का जरिया ही माया के पिता जी के यहां करने वाला काम था । बुधिया के लिए कोई फिक्स काम नहीं था । जो काम सामने आ जाता वह उसे करना था । इसमें गाड़ी धोने से लेकर भैंस नहलाने तक और दाऊ जी को मालिश करने तक सब शामिल था । बुधिया होशियार लड़का था इसलिए घर के लोग भी उसे पसंद करते थे ।

माया के अंदर का योवन अंगड़ाई लेने लगा था और उसके शरीर में कुछ कुछ होने लगा था । उसे फिल्में देखने का बड़ा शौक था । कई बार वह शहर में फिल्म देखने जाती थी और साथ में जाता था, बुधिया । यह क्रम बचपन से चला रहा था । कभी और भी लोग साथ होते और कभी खाली बुधिया ही साथ होता । ऐसे ही एक बार शाहरुख खान की दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे देखने के लिए सब लोग गए । परिस्थितियां कुछ ऐसी बनी कि बुधिया और माया अगल-बगल की सीट पर बैठे । जैसा कि आप लोग जानते ही हैं, फिल्म बड़ी रोमांटिक थी, और युवाओं का हृदय धड़काने वाली थी । माया और बुधिया दोनों जवान थे | फिल्म देखते देखते माया ने बुधिया का हाथ पकड़ लिया । बुधिया भी जवान था ! वह भी रोमांचित हो गया । शुरू में झिझकता रहा..... फिर उसने भी माया का हाथ पकड़ लिया । पूरी फिल्म के दौरान इसी प्रकार पकड़ा पकड़ी चलती रही ..... और दोनों के बीच एक अलिखित सा समझौता हो गया ! जो आगे जाकर इस गंभीर समस्या का कारण बनने वाला था .....

अब माया और बुधिया जब मिलते, तो कभी एक दूसरे का हाथ पकड़ते, कभी एक दूसरे से लिपट जाते । दोनों एक ही घर में रहते थे | इसलिए इस प्रकार की संभावनाएं लगातार बनती रहती थी कि वह अकेले मिल पाते थे । बचपन से दोनों साथ थे, इसलिए घर वाले

भी शक नहीं करते थे । धीरे-धीरे यह खेल आगे बढ़ने लगा .... एक दिन बलराम दाऊ अपनी पत्नी के साथ उसके मायके गए हुए थे । माया की परीक्षा चल रही थी इसलिए उसे घर पर ही छोड़ गए। बुधिया की मां और बुधिया दोनों को हवेली पर ही रहना था।

दाऊजी 2 दिन के लिए गए थे। दोनों प्रेमी को मौका मिल गया था। आंखों ही आंखों में सारी बातें तय हो चुकी थी। बुधिया की मां दिन भर काम करने की वजह से थक कर रात को बिस्तर पकड़ती तो उसकी नींद सुबह ही खुलती थी। उस दिन भी रात के 10 बजे सभी ने बिस्तर पकड़ लिया। माया अपने बिस्तर पर सो रही थी। बुधिया की मां जमीन पर बिस्तर लगाकर उसी के बाजू में सोई हुई थी। बुधिया बाहर वाले दालान में सोया हुआ था ।

खर्राटों की आवाजों से जब माया को पूरा यकीन हो गया कि माई सो गई है तो वह धीरे से कमरे से बाहर निकली और बुधिया के पास पहुंच गई। बुधिया भी इंतजार में था। दोनों प्रेमी कई दिन से ऐसे अवसर की तलाश में थे। उमड़ती जवानी , पूरा एकांत का अवसर मिला और दोनों सारी सीमाएं लाँघ गए .....

जवानी का नया-नया स्वाद मिला था .....

दोनों ने छककर उसका आनंद उठाया .....

जैसे फिर ऐसी रात हो न हो .....

इस रात भर के परिश्रम की वजह से दोनों बुरी तरह थक कर चूर हो गए और कब नींद लगी उनको पता ही नहीं चला .....

बुधिया की मां सुबह उठी तो दिखा बिस्तर पर माया नहीं है …

उसके होश फाख्ता हो गए ….. किसी अंजान आशंका से उसका दिल धडक उठा !

वह बुधिया-बुधिया चिल्लाती हुई दोड़ी …..

दालान का दृश्य देखकर उसकी आत्मा तक कांप गई …..

आपस मे लिपटी दो निर्वस्त्र देह उसके सामने पड़ी थी। जो रात की कहानी बयां कर रही थी .....

उसने बुधिया के गाल पर खींच कर थप्पड़ मारा।

बुधिया हड़बड़ा कर उठ बैठा…….

थप्पड़ की आवाज सुनकर माया भी उठ गई……

दोनों ने माई के पैर पकड़ लिए। बाकी नौकरों के आने का समय हो रहा था किसी की नजर

पड़ जाती तो बचना मुश्किल हो जाता । माई ने जल्दी कपड़े पहनने को कहा और मुड़कर खड़ी हो गयी दोनों कपड़े पहनकर वहां से भागे ।

दिन भर माया कमरे से नही निकली । माई ने उसे पूरी दुनियादारी समझा दी । धमकाया भी कि दाऊजी को पता चला तो दोनो को जान से मार देंगे ।

बुधिया की भी जमकर कुटाई की और सारा ऊँच नीच समझाया । राजा और रंक से लेकर जितना वह समझा सकती थी मारकर रोकर सब समझाया ।

दोनों प्रेमी अब माई की नज़रों में थे । दोनों को एक साथ रहने का मौका उस दिन और अगले दिन नही मिला । पकड़े जाने के बाद दोनों एक दूसरे के सामने आने से बचते रहे ।

वर्जित फल का स्वाद दोनों को लग चुका था .....

वह उसे दोबारा चखने के लिए आतुर थे……

माइ के सामने दोनों आमना सामना करने से बचते थे और अलग हटकर निकल जाते ! लेकिन आंखों ही आंखों में बहुत सारी बातें हो जाया करती थी !

दो दिन बाद दाऊजी वापस गांव लौट आए । फिर से जिंदगी पुराने ढर्रे पर चलने लगी ! दाऊजी के आने के बाद बुधिया और मां वापस अपने घर चले गए । माँ ने सोचा जवानी की भूल थी दोनों समझ गए हैं .....

लेकिन ! हकीकत कुछ और थी ! बुधिया हवेली की हर दीवाल से वाकिफ था .....

रात को दीवार फांद कर माया के कमरे पर पहुंच जाता ....

उसके बाद दोनों की प्रणयलीला प्रारंभ हो जाती ....

सुबह होने से पहले बुधिया झोपड़ी मे वापस हो जाता | काफी दिनों तक यह क्रम चलता रहा | अब दोनों पूरी सावधानी बरतते थे कि किसी को कानो कान खबर ना लग पाये ।

मगर कहते हैं कि इश्क और मुश्क छुपाए नहीं छुपते और यही बात माया और बुधिया के मामले में भी हुई । उड़ती उड़ती खबर दाऊ के पास तक पहुंची । संदेह के आधार पर तत्काल बुधिया को घर के काम से हटा दिया गया और खेतों की आखरी छोर पर बने पंप हाउस में नियुक्त कर दिया गया | अब उसका माया से मिलना लगभग नामुमकिन सा हो गया | उसे देहसुख की आदत हो चुकी थी और हवेली में जाने की उसकी हिम्मत नहीं थी । इस बात को लेकर वह बड़ा बेचैन रहता था ! इस बेचैनी को पंप हाउस में रहने वाले दूसरे नौकर छन्नूलाल की पत्नी मोगरा ने भांप लिया था .....

छन्नूलाल लगभग 55 साल का था । 30-32 साल की मोगरा छन्नूलाल की चौथी पत्नी थी । छन्नूलाल की एक पत्नी बगल वाले गांव में रहती थी | छन्नूलाल हफ्ते में 2 दिन वहां

चक्कर जरूर लगाता था। मोगरा अकेली पंप हाउस में रह जाती थी |

बुधिया के आने से उसे एक दोस्त मिल गया। दोनों साथ काम करते और बातें भी करते।

दोनों जवान थे और दोनों की जरूरत दोनों को एक दूसरे के पास ले आयी। दोनों की नजदीकियां बढ़ने लगी और जब छन्नू अपने गांव जाता तब उसकी भूमिका बुधिया निभाने लगा। एक दिन छन्नू ने दोनों को आपत्तिजनक अवस्था में देख लिया। उसने मोगरा की जमकर पिटाई की और बुधिया को भी धमकाया। मोगरा ने उसकी मर्दानगी पर सवाल उठा दिया और गुपचुप तरीके से उनका कारोबार फिर भी चलता रहा | अब परेशान छन्नू भी बुधिया से बचने के तरीके खोजने लगा।

दाऊजी के साथ में रहता था भागीरथी दीवान | भागीरथी दाऊजी के बेहद ख़ास लोगों में था | वह करीब 25 - 26 साल का युवक था | दाऊजी की बिरादरी का था | उसके पिता भी दाऊजी के मुंशी हुआ करते थे | उनकी असामयिक मृत्यु के बाद पिछले पांच साल से वही दाऊजी का सारा हिसाब किताब देख रहा था | दाऊजी उसके काम से बेहद खुश थे | भागीरथी बेहद ईमानदार और मेहनती युवक था | भागीरथी ने दाऊजी के खेतों से लेकर राइस मिल तक के सारे काम को बखूबी सम्भाला हुआ था | दाऊजी के बाद उसी की सबसे ज्यादा हैसियत थी |

बुधिया और माया की मिलने की तड़प बढ़ती जा रही थी | एक दिन माया चुपके से पम्प हॉउस पहुँच गयी | उस समय कोई वहां नहीं था | शाम का समय था | दोनों को समय का आभास नहीं रहा | छन्नू के लिए सुनहरा मौका था उसने हवेली तक दौड़ लगाई और दाऊ के कानों में खबर डाल दी | दाऊजी अपने खास लड़कों को लेकर पंप हाउस पहुंच गए। वहां का नजारा देखकर दाऊजी का पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया। उनके आदेश पर लाठियों से बुधिया की बेदम पिटाई हुई और दाऊ जी माया को लेकर घर लौट गए।

पिटाई से बुधिया बेहोश हो गया | बेहोश हो जाने के बाद लड़कों ने उसे उठाकर नदी में फेंक दिया। दूसरे दिन उसकी लाश नदी में तैरती हुई मिली। बुधिया की मा ने इस मामले को लेकर पुलिस में शिकायत दी, लेकिन गरीब की सुनवाई कहां होती है। ले देकर मामला डूब जाने से मौत का बन गया और रफा-दफा हो गया।

इधर दाऊजी ने घर पहुंचने के बाद अपनी लाडली बिटिया की भी जमकर पिटाई की। उसे हफ्ते तक कमरे में बंद कर दिया गया और कहीं भी बाहर आने-जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। एक हफ्ते के बाद माया को ननिहाल भेज दिया गया क्योंकि डॉक्टर ने उसके गर्भवती होने की जानकारी दी।

इस गंभीर समस्या का समाधान भी गुपचुप तरीके से निकालना जरूरी था। इसके लिए जरूरी था कि माया को गांव से बाहर भेज दिया जाए। ननिहाल में बड़े ही गोपनीय तरीके से माया के गर्भ में पल रहे शिशु को मौत के घाट उतार दिया गया। माया ने अपनी तरफ से हर संभव कोशिश की लेकिन उसकी एक न चली। इस गर्भपात के बाद माया बीमार

By Anonymous

रहने लगी | दाऊजी ने कई प्रकार से इलाज कराया लेकिन बहुत ज्यादा अंतर नहीं आया ।

काफी सोच विचार करने के बाद दाऊजी ने भागीरथी से माया का ब्याह कराने का निश्चय कर लिया और दोनों का ब्याह हो गया । भागीरथी के लिए यह लॉटरी लगने जैसी बात थी । वह एक गरीब परिवार से था | इतने बड़े दाऊ की बेटी से शादी उसके लिए किसी स्वप्न के साकार होने से कम नहीं थी । उसने बुधिया और माया के बारे में लोगों द्वारा कभी जही जा रही बातों को ध्यान में ना लेते हुए अपना वैवाहिक जीवन प्रारंभ कर लिया । धीरे धीरे माया भी बुधिया को भूलने लगी और भागीरथी के साथ गृहस्थी में रम गई । उनका एक बेटा हुआ जो पढ़ाई करने अमेरिका गया और वही बस गया । अब केवल पति पत्नी रह गए थे क्योंकि दाऊजी और पत्नी का भी स्वर्गवास हो चुका था । अब माया की उम्र भी 40 के आसपास हो चली थी । लेकिन उसके सौंदर्य में कोई कमी नहीं आई थी देखने पर अब भी वह 25 30 साल से ज्यादा की नहीं लगती ……...

माया के बारे में तो सब कुछ पता चल गया था अब अगला विषय था बुधिया

बुधिया का प्रेत

मुझे उसकी तरफ से ही गड़बड़ दिखाई देती थी कपालिनी ने उस रहस्य से भी पर्दा उठाया.....

उस रात को बेदम पिटाई के बाद अधमरे बुधिया को नदी में फेंक दिया गया था और अगले दिन उसकी लाश बरामद हुई थी। बुधिया की लाश को गांव के रिवाज के अनुसार दफनाया गया था। गांव से लगभग आधे किलोमीटर की दूरी पर जंगल था। उस जंगल में एक महिला रहा करती थी | जिसे गांव वालों ने डायन बताकर गांव से बेदखल कर दिया था । उसका नाम था चमेली बाई। चमेली काले जादू की जबरदस्त जानकारी थी। ऐसा माना जाता है कि काली शक्तियों का सबसे बड़ा मंत्र ढाई अक्षर का होता है और वह बेहद शक्तिशाली होता है। इस मंत्र की शक्ति दूसरों को नुकसान पहुंचाने वाले कार्यों को करने से बढ़ती जाती है । गांव वाले उससे बचकर रहते थे क्योंकि उसकी शक्तियों से लड़ पाना किसी के बस की बात नहीं थी। उसके मुंह से अगर कोई गलत बात निकल गई तो वह सच हो जाती थी। इसलिए सब उस से दूरी बनाकर रहते थे।

चमेली लगभग 30-35 साल की महिला थी। उसे अपने प्रयोगों के लिए युवा पुरूष की जरूरत थी। मसान घाट के किस कोने में बुधिया को दफनाया गया था वह बेहद सुनसान था रात को उस तरह कोई नहीं आता था। उसने बुधिया के शव को रात को निकाल लिया। उसने शव को निकालने के बाद मट्टी पत्थर डालकर दफन किए गए स्थान को वैसा ही बना दिया ताकि किसी को पता ना चले कि नीचे से लाश गायब की जा चुकी है। बारिश का मौसम था गिरते हुए पानी ने बाकी काम कर दिया और दफन की हुई जगह पहले जैसी दिखने लगी | चमेली ने बुधिया के शव को अपनी झोपड़ी तक पहुंचा दिया .....

वह सावन का महीना था और अमावस्या की रात .....

यह छत्तीसगढ़ में हरेली त्यौहार के रूप में मनाया जाता है .....

तंत्र साधकों के लिए यह साल का सबसे बड़ा पर्व होता है.....

खासतौर से विपरीत या काली विद्या के जानकार इस दिन अपनी शक्तियों को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रयोग करते हैं। खासतौर से अलग-अलग प्रकार की मारण प्रयोग के लिए यह रात्रि बेहद खास मानी जाती है। इस दिन किए गए प्रयोग बेहद शक्तिशाली होते हैं और उनकी काट करना बहुत मुश्किल होता है। इसलिए आज भी छत्तीसगढ़ के गांव में हरेली की रात मे लोग ज्यादा बाहर नहीं निकलते हैं | खासतौर से मध्य रात्रि और उसके बाद का समय सबसे खतरनाक माना जाता है। खैर.....

चमेली ने बुधिया के शव को उत्तान लिटाया। उसने अपने वस्त्र भी उतार दिए। उसके पास एक खप्पर था। जिसमें नीले रंग का कोई द्रव पदार्थ डला हुआ था। उस को चमेली ने बुधिया की छाती पर रख दिया। चमेली पैर की तरफ बैठ गई और मंत्र जाप करने लगी।

लगभग आधे घंटे के बाद वह खप्पर धीरे-धीरे खाली होने लगा। उसमें रखा हुआ नीला द्रव जैसे बुधिया के शरीर में समा रहा था। जैसे-जैसे वह नीला द्रव बुधिया के शरीर में समा रहा था उसके शरीर में पड़े हुए चोट के निशान धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे थे। जब खप्पर का पूरा द्रव खाली हो गया तो शरीर भी सामान्य हो गया। उसे देख कर ऐसा लग नहीं रहा था कि उसे पीट-पीटकर मार डाला गया था और उसके हर अंग में लाल नीले निशान मौजूद थे। पूरा शरीर एकदम साफ सुथरा और सुंदर हो गया था।

इतनी क्रिया संपन्न हो जाने के बाद चमेली अपने स्थान से उठी और उसके सिर की तरफ आकर बैठ गई। उसके पास काले रंग का एक मुर्गा था और एक छुरी थी। सर के पास बैठकर उसने फिर से मंत्र जाप किया। धीरे-धीरे उसके शरीर में कंपन होने लगा। वह अपने आसन पर थरथराने लगी। कुछ देर में वह अपने सर को भी दाएं बाएं जोर जोर से हिलाने लगी। उसके शरीर में संबंधित शक्ति का आगमन हो चुका था और वह बार-बार जीभ लप लपा रही थी। थोड़ी देर के बाद उसने मुर्गे का सर धड़ से एक ही झटके में अलग कर दिया और सर को बुधिया के सर के पास रख दिया। कटे हुए धड़ को अपने मुंह से लगा लिया और उसमें से बाहर आते खून को पीने लगी। आधे घंटे तक झूमने के बाद वह शांत हुई। इसी प्रकार से उसने शव के दाएं बाएं बैठकर भी मंत्र जाप किया।

उसके हाथ में अब एक काला कबूतर था। अब वह शव के सीने पर चढ़कर वह बैठ गई। बुधिया का शरीर अभी तक निश्चल पड़ा हुआ था। चमेली कबूतर को एक हाथ में लेकर दूसरे हाथ में भाले जैसा एक छोटा शस्त्र रखे हुए थी। सीने पर बैठकर जैसे-जैसे मंत्र जाप प्रारंभ हुआ। बुधिया के मृत शरीर में हल्की-हल्की हलचल होने लगी। बुधिया का शरीर थरथराने लगा। ऊपर बैठी हुई चमेली स्थिर बैठी हुई थी।

बुधिया विशाल शरीर का स्वामी था ....

वही चमेली दुबले पतले बदन की महिला .....

देखने में यह एकदम हाथी और महावत जैसा दृश्य था। भरे पूरे बदन के विशालकाय बुधिया के शरीर के ऊपर नाजुक सी चमेली बैठी हुई थी।

जैसे-जैसे मंत्र जाप आगे बढ़ता गया बुधिया का शरीर भी जोर जोर से हिलने लगा और एक स्थिति में उसकी आंखें खुल गई .....

उसने अपने दोनों हाथ चमेली की तरफ बढ़ाए.....

चमेली ने तत्काल उस काले कबूतर को उसके हाथ में दे दिया। कबूतर हाथ में मिलते ही एक हाथ से उसने कबूतर की गर्दन उधेड़ दी और उसे अपने मुंह में लेकर उसका पूरा रक्त चूस लिया। रक्त चूस लेने के बाद ऐसा लगा जैसे वह तृप्त हो गया हो .....
चमेली ने बाजू में अपने रज से भरा हुआ पात्र रखा हुआ था। उस पात्र में से रक्त लेकर बुधिया के माथे पर वक्ष स्थल पर और गुप्तांग पर तिलक कर दिया। जैसे ही यह तिलक

हुआ बुधिया का शरीर तेजी से तैयार होने लगा । चमेली ने पीछे की तरफ खिसक कर बुधिया के अंग को अपने अंग में समाहित कर लिया और मर्दन चालू हो गया । यह गति बढ़ती चली गई .....

पूरा कमरा चमेली की सिसकारियों से गूंज रहा था .....

कुछ समय के बाद बुधिया ने चमेली को नीचे पटक दिया और प्रवेश कर गया.....

हुंकारे के साथ तेजी से ऐसा लग रहा था जैसे बुधिया चमेली को मसल कर चटनी बना देगा ....

तभी !

चमेली ने भाले जैसा अस्त्र बुधिया की नाभि में डाल दिया । एक पल के लिए बुधिया स्थिर हुआ और चमेली ने बिजली की गति से पलटी लेकर फिर बुधिया को नीचे कर दिया । साथ ही भाले को और दबा दिया । भाला उसके पीठ से निकल जमीन में घुस गया । पास रखी शराब की बोतल में से एक घूंट चमेली ने पिया और बाकी जूठी शराब की बोतल शव के हलक में उतार दी । कुछ मंत्रों के साथ चमेली ने बुधिया को वचनबद्ध कर लिया था । अब वह उसका गुलाम था | इसके बाद चमेली उसके शरीर से अलग होकर खड़ी हो गई । बुधिया का शव फिर से शांत हो चुका था .....

चमेली ने खप्पर में एक लाल रंग का द्रव लिया और उसके सामने बैठकर मंत्र जाप करने लगी । आधा घंटे मंत्र जाप करने के बाद खप्पर में द्रव उबलने लगा । चमेली ने अपनी छोटी उंगली में चीरा लगाया और तीन बूंद खून उस उबलते हुए द्रव में डाल दिया । खून पडते ही द्रव का उबाल बंद हो गया । चमेली ने उस द्रव को बुधिया के शरीर पर डाल दिया । बुधिया का शरीर भभक कर जलने लगा और थोड़ी ही देर में राख के ढेर में परिवर्तित हो गया । छह फुट का शरीर मुट्ठी भर राख में परिवर्तित हो चुका था । इस राख को चमेली ने एक कांच के बने हुए मरतबान में भर दिया । इसके साथ बुधिया का वचनबद्ध प्रेत अब कांच के बने हुए मर्तबान में कैद था .....

अपने काले जादू के प्रयोग से बुधिया का प्रेत उसका सेवक हो गया । चमेली अकेली थी ! जवान थी ! उसकी भी अपनी जरूरत थी जो गांव के किसी पुरुष से पूरी होना लगभग असंभव था क्योंकि सभी उससे डरते थे । ऐसी स्थिति में उसके पास यही एक रास्ता बचा था । उसने बुधिया के प्रेत को सिद्ध कर लिया और उसी के साथ संबंध बनाने लगी । बुधिया भी प्रबल कामना के बीच में मरा था इसलिए उसके अंदर भी इस प्रकार के संबंधों की प्रबल इच्छा मौजूद थी । इस प्रकार की प्रबल इच्छा प्रेत योनि में जाने पर और प्रबल हो जाती है । चमेली का साथ उसके अधूरे सपनों को पूरा करने जैसा था और वह चमेली के साथ लगातार कई सालों तक रहा । दोनों संतुष्ट थे .....

बुधिया फिर भी बैचेन रहता | चमेली ने उसे सिद्ध किया था इसलिए वह उसके अनुसार

काम करने के लिए विवश था। उसके साथ संसर्ग भी उसे अच्छा लगता ..... लेकिन उसकी बड़ी इच्छा होती कि वह माया को जाकर देखें ..... चमेली ने उसे अपनी झोपड़ी के अंदर ही कीलित कर दिया था। जिसके चलते वह झोपड़ी के बाहर नहीं जा सकता था। अपना काम हो जाने के बाद वह बुधिया को कांच के बने हुए मर्तबान में बंद कर देती थी और जरूरत के अनुसार उसे बाहर निकाल कर अपनी इच्छा पूर्ति करती।

चमेली शक्तिशाली विद्याओं से युक्त महिला थी | उसके साथ निरंतर संबंध और सानिध्य के चलते बुधिया का प्रेत और शक्तिशाली होता गया। कइ साल तक यह क्रम चलता रहा। चमेली अपने साधनाओं के माध्यम से और शक्तिशाली होती चली गई। उसके लिए असाध्य कुछ भी नहीं रहा। सिर्फ अपने हाथ के एक इशारे पर वह कुछ भी प्राप्त करने में सक्षम थी।

बुधिया की आजादी

एक दिन अचानक चमेली के गुरु का आगमन हुआ। किसी विशेष आयोजन के लिए साथ ले जाने के लिए गुरु आया था। उसने तत्काल साथ चलने का आदेश दिया। चमेली अपना सामान लेकर गुरु के साथ चल पड़ी। उसके बाद वह वापस उस इलाके में कभी दिखाई नहीं दी।

मरतबान में बंद बुधिया उसी अवस्था में झोपड़ी में पड़ा रह गया। चमेली के जाने के बाद भी लोग उसकी झोपड़ी की तरफ जाने से डरते थे क्योंकि उन्हें लगता था वहां जाने से कुछ ना कुछ बुरा हो जाएगा।

एक तरह से उसकी झोपड़ी को अभिशप्त माना जाता था। जंगल के अंदर होने की वजह से आसानी से कोई उस तरफ जाता भी नहीं था। समय गुजरने के साथ झोपड़ी के दरवाजे में भी दीमक लगने लगी। धीरे-धीरे वह खोखली होने लगी .....

एक दिन भारी बारिश हुई और साथ ही जोरदार बिजली भी गिरी। उसमें से एक बिजली उस झोपड़ी पर भी जा गिरी। बुरी तरह जर्जर झोपड़ी उसका तेज सहन नहीं कर पाई और धू-धू करके जलने लगी। पूरी झोपड़ी जलकर खाक हो गई .....

इसी आपाधापी में कांच का मर्तबान भी जमीन पर गिर के टूट गया और टूटते ही बुधिया का प्रेत आजाद हो गया। सालों से बंद बुधिया के लिए खींची गई रेखा और बंधन झोपड़ी की दीवारों में था। झोपड़ी की दीवारों पर कई प्रकार के यंत्र लटके हुए थे । यहां तक की छत में अलग-अलग प्रकार के तांत्रिक पदार्थ लटके हुए थे । जिसमें हल्दी के फूलों से लेकर गुंजा की जड़ तक और मानव खोपड़ी से लेकर सांप की अस्थियों से बनी हुई माला तक सब कुछ शामिल था। झोपड़ी में लगी उस भयानक आग में वह भी जलकर खाक हो चुकी थी और अब बुधिया पूरी तरह से स्वतंत्र था .....

बुधिया के अंदर दबी हुई इच्छा अभी भी उतनी ही तीव्र थी .....

वह माया को भूल नहीं पाया था।

आजाद होते ही उसका पहला टारगेट था - !!! माया !!!

वह पूरी तेजी से गांव की ओर लपका .....

बारिश हो रही थी .....

बिजली भी कड़क रही थी .....
हर कोई अपने घर के अंदर था। माया भी अपने घर में थी। बिस्तर पर दोनों पति पत्नी गहरी नींद में सो रहे थे। तभी कमरे की खिड़की भड़ की आवाज के साथ खुली। दोनों पति-पत्नी हड़बड़ा कर उठ बैठे। खिड़की खुली हुई थी और उसके पल्ले आपस में एक दूसरे से टकरा रहे थे।

By Anonymous

बुधिया की एंट्री हो चुकी थी……

इस बात से अनजान उन्होंने खिड़की बंद की और एकांत का लाभ उठाने के लिए एक दूसरे को अपनी बाहों में भर लिया। बुधिया को भला यह कैसे सहन होता ?

परिणाम……...

अचानक भागीरथ जी के को किसी ने उठाकर पलंग से नीचे फेंक दिया। माया भी हड़बड़ा गई कि अचानक यह कैसे हो गया। उसने उठने की कोशिश की लेकिन वह अपने बिस्तर से नहीं उठ पाई।

उसे ऐसा लगा जैसे उसे बिस्तर से चिपका दिया गया हो .....

भागीरथी नीचे गिरकर बेहोश हो चुका था। शायद सर में चोट लगी थी……

बुधिया का सालों पुराना स्वप्न साकार होने वाला था !

उसकी आतुरता हर सीमा को लांग चुकी थी !

वह किसी भी तरह माया को भोगने के लिए आतुर हो गया था .....

माया डर के मारे कांप रही थी। अनिष्ट की आशंका से उसका दिल दहल रहा था | आमतौर पर महिलाओं की छठी इंद्री ज्यादा जागृत होती है और उन्हें किसी संकट का पूर्वाभास बड़ी सहायता से हो जाता है।

तभी.....

माया को ऐसा महसूस हुआ ....जैसे .....कोई उसके अंतर्वस्त्र को खींच रहा हो .....

दूसरे ही पल वह अंतर्वस्त्र जमीन पर पड़ा था। आनन-फानन में किसी ने उसके सारे वस्त्र खींचकर फेंक दिए।

अब वह निर्वस्त्र अवस्था में अपने बिस्तर पर पड़ी थी .....

बुधिया किसी शातिर शिकारी की तरह उस पर टूट पड़ा। विवाहित स्त्री होने के कारण माया जानती थी कि उसके साथ क्या हो रहा है ..... लेकिन कौन कर रहा है यह उसकी समझ से परे था।

उसके शरीर के हर अंग को बुधिया ने मन भरते तक मसला और फिर पुरानी प्रेमिका के मिलने की खुशी और बहुत दिनों के बाद देह सुख का आनंद पाने की उत्कंठा दोनों ने एकत्र होकर बुधिया को और पाशविक बना दिया था .....

वह रात माया के लिए बहुत भयानक गुजरी बुधिया ने उसे पूरी रात रौंदा .....

By Anonymous

उसकी स्थिति मरणासन्न सी हो गई थी । बुधिया एक तो प्रेत था ऊपर से सालों की उत्कंठा और इच्छा ने उसे चौगुना पाशविक बना दिया था । माया के ऊपर उसने अपने पूरे कस बल का प्रयोग करके अपनी कसर उतारी । इसके बाद बेचारी माया बिस्तर से उठने लायक भी नहीं रही…...

बुधिया बहुत दिन बाद तृप्त हुआ था । चमेली के जाने के बाद काफी दिन वह कैद में रहा था ।

सुबह 4 बजे का समय ब्रह्म मुहूर्त का माना जाता है । जब ब्रह्म मुहूर्त प्रारंभ होता है तो पैशाची शक्तियों की शक्ति कम होती जाती है । इसलिए साढ़े तीन बजे बुधिया वहां से निकल गया .....

अब स्थिति यह थी की माया बिस्तर पर बेहोश थी और भागीरथी जमीन पर । लगभग 5 बजे माया को होश आया । होश में आते ही वह भागीरथी की ओर दौडी । उसने देखा भागीरथी अभी बेहोश पड़ा है । पास पड़े हुए पानी के जग से पानी निकालकर छिड़का ... तो थोड़ी सी हरकत हुई.... माया की जान में जान आई..... फिर उसने पानी और छिड़का । थोड़ी देर में भागीरथी को होश आया ! सर पर एक गूमड़ निकल चुका था | जिससे दर्द हो रहा था ।

इस सारी आपाधापी में माया हड़बड़ाहट में कपड़े पहनना भूल गई थी । उसके नग्न शरीर पर लाल नीले निशान दिखाई दे रहे थे । भागीरथी को रात की घटना याद आई । उसने माया से रात के बारे में पूछा । माया फूट-फूट कर रो पड़ी । उसने रोते-रोते पूरा किस्सा बयान किया और बताया कि उसके साथ क्या-क्या हुआ । उसके शरीर के निशान बता रहे थे कि किस बेदर्दी से उसे रात भर नोचा गया । घटना के विवरण से दोनों यह तो समझ गए थे कि किसी पैशाची शक्ति ने इस घटना को अंजाम दिया है । इसलिए अगली सुबह समस्या के समाधान के लिए सबसे पहले गांव के बैगा को बुलाया गया ।

गांव का बैगा - जंगली

गांव का बैगा था जंगली ....जंगली गोंड समुदाय का था। वह बस्तर और अबूझमाड़ के जंगलों में अपना बचपन गुजार कर आया था। जवानी का समय उसने छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध शक्तिपीठ डोंगरगढ़ की गुप्त गुफाओं में साधना करते हुए बिताया था। वह बहुत ही नेक दिल और सज्जन किस्म का बैगा था। पूरा गांव उसकी इज्जत करता और उससे सलाह मांगता। उसने कभी भी किसी को गलत सलाह नहीं दी। ना ही किसी महिला या युवती पर गलत नजर डाली। इसलिए गांव की महिलाएं भी बड़ी सहजता से उसे अपनी समस्याएं बता पाती थी। सबसे पहले उसे इस समस्या के समाधान के लिए बुलाया गया।

जंगली अपनी लाठी और झोले के साथ हवेली में 12 बजे के आसपास पहुंचा। हवेली के दरवाजे पर पहुंचते ही उसे आभास हो गया की यहां कुछ गंभीर घटित हुआ है। घर के सभी नौकरों को बाहर भेज दिया गया और कमरे के अंदर ले जाकर दाऊजी ने जंगली बैगा को सारी बात बताइ।

सारी बातें सुनकर बैगा सोच में पड़ गया। उसने अपनी थैली में से एक छोटी सी खोपड़ी निकाली। यह खोपड़ी एक बंदर की थी। बंदर को हनुमान का प्रतीक माना जाता है। समस्त प्रकार की पैशाचिक शक्तियां भगवान हनुमान के नाम से घबराती हैं। इसलिए अक्सर बैगा मानव खोपड़ी की जगह बंदर की खोपड़ी अपने पास रखते हैं। इसमें यह ध्यान देना होता है कि बंदर स्वाभाविक मृत्यु मरा हो। किसी प्रकार की दुर्घटना या आघात से मरे हुए बंदर की खोपड़ी इस प्रकार के काम में उपयोग नहीं की जा सकती है।

जंगली ने जब खोपड़ी को सामने रखकर पूजन प्रारंभ किया तो वह खोपड़ी धीरे-धीरे अपने जगह पर घूमने लगी। खोपड़ी इस प्रकार से घूमने का मतलब होता था कि उस स्थान पर किसी प्रकार की बाधा अवस्थित है। बाबा ने दाऊजी को समस्या के बारे में बताया कि यहां पर किसी प्रेत की उपस्थिति है।

आमतौर पर गांव के बैगा जब किसी पूजन या किसी बाधा को हटाने की प्रक्रिया करते हैं तो दो चीजों की मांग अवश्य करते हैं। इसमें पहली होती है दारू ,और दूसरा होता है मुर्गा ।

जंगली बैगा ने भी इन दोनों चीजों की मांग की। नौकरों को दौड़ाया गया। उसी रात को 9 बजे के बाद पूजन करने की व्यवस्था तय की गई । दाऊजी के यहां से जंगली अपने घर पहुंचा। जब वह अपने घर पहुंचा तब तक दिन के 2 बज चुके थे। शाम को पूजन करना था । जंगली बैगा ने सोच कि एक झपकी लेनी है ताकि शाम का पूजन अगर लंबा खिंच जाए तब भी ताकत बनी रहे।

जंगली के लिए यह पहला अवसर नहीं था। इससे पहले भी वह इस प्रकार की समस्याओं का समाधान कर चुका था। उसे यह प्रकरण भी वैसा ही कुछ लगा और वह अपनी झोपड़ी में जाकर सो गया। लगभग शाम के 8 बजे होंगे, जब दाऊजी के हवेली से नौकर उसे बुलाने

आ गया। तब तक जंगली एक नींद पूरी कर चुका था और पूरी तरह से फ्रेश और तैयार था प्रेत से भिड़ने के लिए।

उधर बुधिया का प्रेत रात होने का इंतजार कर रहा था क्योंकि उसकी शक्तियां दिन में कम हो जाती थी और रात के 11 बजे के बाद बढ़ती थी और रात 12 बजे तक पूरी तरह से जागृत हो जाती थी। इसलिए दिन के समय वह बस्ती से काफी दूर चमेली की झोपड़ी के पास एक गूलर के पेड़ पर आसन जमा लेता था। पहली रात का उसका अनुभव उसे कई साल पीछे ले गया था और वह बेहद आकांक्षा के साथ आज की रात दुबारा उस अनुभव को लेने के लिए आस लगाए बैठा था .....

उसे इस बात का कोई आभास नहीं था कि इस बीच में उसके खिलाफ कुछ तैयारी भी हो सकती है। क्योंकि बुधिया एक बेहद भोला भाला देहाती युवक था जिसे बहुत ज्यादा दुनियादारी और कुटिलता नहीं आती थी। शारीरिक आवश्यकताओं ने उसे माया की तरफ आकर्षित किया था और दोनों की सहमति से संबंध भी बने थे। केवल उसे दोषी मानते हुए मौत के घाट उतार दिया गया था। इसके बावजूद उसके अंदर किसी से बदला लेने की इच्छा नहीं थी। हां माया की देह के प्रति उसका आकर्षण अभी भी उतना ही प्रबल था। जिसकी वजह से वह उसकी ओर पागलों की तरह आकर्षित था। शायद इसके पीछे कई वर्षों का बिछड़ना भी एक वजह हो सकती है। जो भी हो उसकी नजर अर्जुन की तरह केवल माया पर टिकी हुई थी। बाकी दुनियादारी से उसे कोई लेना-देना नहीं था .....

हवेली में उसके खिलाफ जंगली बाबा ने अपना मोर्चा तैयार करना चालू कर दिया। सबसे पहले गोबर के कंडे को जलाकर धूम तैयार किया गया .। इसमें विभिन्न पदार्थों जिसमें दशांग आदि भी शामिल है डालकर आहुतियां दी जाती है। जिससे निकले हुए धुए को संबंधित देवी या देवता के लिए समर्पित किया जाता है और उनसे कृपा प्राप्ति की प्रार्थना की जाती है।

हर बैगा का अपना एक देवता होता है , जो आमतौर पर किसी सिद्ध पुरुष की आत्मा या कोई और आत्मा होती है। जो किसी वजह से मुक्त नहीं हो पाती है और लोगों को मदद करने के लिए काम करती है। बैगा बाबा के पास भी उसी प्रकार की आत्मा या देवता मौजूद था।

संबंधित देवता का बल तब बढ़ता है जब उसे सिद्ध करने वाला व्यक्ति उसे बराबर होम धूप देता है। साथ ही समय-समय पर उसकी इच्छा अनुसार शराब मुर्गा बकरा नींबू कुमड़ा जैसी भोग सामग्री उसे अर्पित करता रहता है। जब यह नियमित समय समय पर होता है तो वह देवता भी प्रबल होता जाता है।

जंगली बाबा ने जिस देवता को सिद्ध किया था वह उसके साथ लगभग 15 वर्षों से था और जंगली बाबा उसे बराबर धूम अर्पित करता रहता था | जिससे उसकी शक्ति निरंतर बढ़ती रहती थी। यही वह कारण था जिसकी वजह से जंगली के द्वारा किए गए सारे कार्य आम तौर पर सफल होते थे।

By Anonymous

प्रेत बाधा के लिए धूम देना था | इसलिए खासतौर से लोबान और गूगल को उसमें शामिल किया गया था । धूम के धूए से हवेली खुशबू से भर चुकी थी । बैगा बाबा के निर्देशानुसार दाऊजी के नौकरों ने दो काले देसी मुर्गे और 3 बोतल शराब की व्यवस्था घर में कर दी थी ।

रात के लगभग 10 बजे से पूजन प्रारंभ हुआ । इसके लिए एक गोल घेरे में माया को बैठाया गया । जंगली बाबा ने उसके चारों तरफ अपनी लाठी से एक और गोल घेरा बनाया । यह घेरा इतना बड़ा था कि उसमें माया के अलावा जंगली भी आ सके । इस प्रकार माया एक छोटे गोल घेरे में थी और उसके बाहर बने हुए बड़े गोल घेरे में उसके सामने जंगली आसन लगाकर बैठा हुआ था ।

जंगली ने अपने देवता को प्रसन्न करने की प्रक्रिया चालू की । उसके लिए उसने अपने गुरु के द्वारा दिए गए मंत्र का जाप प्रारंभ किया । मंत्र आदिवासी भाषा में था इसीलिए किसी की समझ में नहीं आ रहा था । मंत्र जाप लगातार अजीब अजीब से शब्दों के साथ जारी था । गोपनीयता भंग ना हो इसलिए यह सारा कार्य भीतरी दालान में हो रहा था और सारे नौकर घर भेज दिए गए थे ...

केवल सबसे विश्वासपात्र नौकर डमरु सामने दरवाजे पर पहरे में था । डमरु हट्टा कट्टा साढे 6 फुट का जवान था और अकेला तीन चार लोगों को निपटाने के लिए काफी था । वह भागीरथी का दाहिना हाथ था । वह परिवार के एक सदस्य की तरह ही था | उसका खाना पीना भी घर की रसोई में ही बनता और दाऊजी जब भी बाहर जाते तो घर की रखवाली और बाकी सारे कामकाज डमरु की ही देखरेख में चलते थे । यूं समझ लीजिए कि जो स्थिति भागीरथी की दाऊजी के साथ थी , वही स्थिति डमरु की भागीरथी सेठ के साथ है ।

हवेली में पूजन का क्रम जारी था ..... जंगली बाबा अपनी धुन में मंत्रों का उच्चारण कर रहा था और घेरे के अंदर बैठी हुई माया का शरीर धीरे-धीरे हिल रहा था .....

थोड़ी देर के बाद बाबा ने अपने साथ लाए छोटे तबले जैसे वाद्य यंत्र को बजाना चालू कर दिया । जैसे-जैसे डुगडुगी जैसी उसकी आवाज बढ़ती गई.... माया के अपने जगह पर हिलने की गति भी बढ़ती चली गई .....

लगभग 11 बजने वाले थे और पूजन जारी था ।

रात के 11 बजते बजते बुधिया की बेचैनी बढ़ने लगी । उसकी शक्तियां पूरी तरह से जागृत नहीं हुई थी फिर भी वह धीरे-धीरे दाऊजी के हवेली की तरफ चल पड़ा । जब वह आधे रास्ते पर पहुंचा तभी उसके कानों में चमेली की आवाज गूंजी ,

बुधिया हवेली में खतरा है सावधान रहना ....

जब हम किसी के साथ शारीरिक संबंध बनाते हैं तो वह कहीं ना कहीं एक तार विपरीत लिंगी के साथ जोड़ता है, जो हमें जीवन भर उसके साथ जोड़े रखता है ।

By Anonymous

विशेष रुप से तंत्र साधना के क्षेत्र में जब भी ऐसी स्थिति आती है, तो दोनों में से किसी पर भी संकट आने पर दूसरे को आभास हो जाता है। यदि वह साधनआत्मक रूप से ताकतवर है तो वह दूसरे सहयोगी को मानसिक सन्देश भी भेज सकता है।

यही स्थिति इस केस में हुई थी। चमेली को बुधिया के ऊपर होने वाले संभावित हमले की आशंका मिल गई थी। उसने मानसिक रूप से बुधिया को संदेश भेजकर सचेत करने का प्रयास किया। बुधिया भी बेहद शक्तिशाली था इसलिए उसने इस संदेश को प्राप्त भी कर लिया।

चमेली की आवाज सुनकर बुधिया ठिठक गया। चमेली बेवजह उसे संकेत नहीं देगी इतना तो वह जानता था। ऐसी परिस्थिति में सावधानी रखना बेहतर होगा यह वह समझता भी था।

नई-नई मिली आजादी को वह खोना नहीं चाहता था इसलिए उसने हवेली से दूर रहकर नजर रखने का विचार किया।

इधर हवेली में पूजन जारी था .....

माया थककर बेहाल हो चुकी थी और घेरे में ही गिर गई थी। जंगली बैगा प्रेत के आने की उम्मीद किए बैठा था। लेकिन चमेली की चेतावनी के बाद बुधिया हवेली में आने से ठिठक गया था .....

जंगली ने इसे अपनी जीत समझ लिया था। जब उसने 12 बजे तक किसी प्रकार की हलचल नहीं देखी तो वह निश्चिंत सा हो गया। उसने अपना पूजन समाप्त किया और दाऊजी को बताया कि उसने प्रेत का बन्धन कर लिया है। घर का बंधन करना बाकी है..... वह उसे कल आकर करेगा ....

माया को दाऊजी ने बड़ी मुश्किल से उठाकर लड़खड़ाते कदमों के साथ अपने बिस्तर पर पहुंचाया। वहां जाकर माया लगभग बेहोश हो गई। उसे कमरे में छोड़कर दाऊजी ने जंगली को विदा किया। डमरु को भी दरवाजे वगैरह बंद करके सो जाने के लिए कहा। डमरु की झोपड़ी हवेली के दरवाजे के बाहर ही थी | वह भी जाकर सो गया।

बुधिया हवेली के बाहर नीम के पेड़ के ऊपर बैठा हुआ था। उसने बैगा को जाते हुए देखा। चमेली की बात याद आई और मन ही मन धन्यवाद दिया कि उसकी वजह से आज जान बच गई।

बैगा के जाने के बाद बुधिया हवेली की तरफ बढ़ा। हवेली के पास पहुंचते ही उसको जलन होने लगी। ऐसा लगा जैसे उसका स्पर्श आग से हो गया हो। वह छिटककर पीछे गिरा। यह बिल्कुल नई बात थी क्योंकि वह अपने आप को बहुत शक्तिशाली समझता था। उसने फिर से प्रयास किया। अबकी बार भी वही हश्र हुआ।

By Anonymous

दरअसल बाबा के द्वारा किए गए पूजन का असर अभी भी था। बाबा ने अपने देवता को एक हफ्ते के लिए हवेली की रक्षा में तैनात किया था। उसकी शक्तियों ने प्रेत को पीछे ढकेल दिया था। जब काफी प्रयास करने के बाद भी वह हवेली में नहीं घुस पाया तो उसे क्रोध आने लगा। उसे जंगली बाबा अपना सबसे बड़ा दुश्मन लगने लगा। जो उसे माया से मिलने से रोक रहा था।

इधर बाबा अपने घर जाकर सो गया था। मुफ्त में मिली दारू की वजह से जंगली लगभग दो बोतल अपने हलक में उतार चुका था और बेहोशी की हालत में सो रहा था।

छत्तीसगढ़ में काले जादू की विशेषज्ञ महिला को टोनहीं तथा विशेषज्ञ पुरुष को सोधे कहा जाता है। जंगली की ताकत का लोहा गांव के सभी काले जादू वाले मानते। कोई भी उस पर प्रहार करने की कोशिश नहीं करता क्योंकि उस पर प्रहार करने का मतलब अपना गंभीर नुकसान उठाना होता था। उस पर प्रहार करने की हिम्मत करने वाले तीन सोधे और एक टोनहीं बहुत दिन तड़पने के बाद स्वर्ग सिधार चुके थे।

इस घटना को लगभग 10 साल हो चुके थे और तब से अब तक किसी ने भी दोबारा ऐसी हिमाकत नहीं की थी। इसके चलते जंगली निश्चिंत हो गया था। अति आत्मविश्वास हमेशा नुकसानदायक होता है। प्रेत बाधा के निवारण के बाद आमतौर पर वह अपनी झोपड़ी की रक्षा के लिए बंधन करता था, लेकिन आज नशा इतना ज्यादा हो गया कि बंधन करना भूल गया। इसका लाभ बुधिया को मिला।

बुधिया ने उसकी झोपड़ी पर अपना अग्निबाण चला दिया। झोपड़ी की रक्षा करने वाला देवता आज हवेली पर तैनात था। बुधिया का अग्निबाण झोपडी से टकराया और झोपड़ी धू धू करते जलने लगी। घास फूस की झोपड़ी थी और देखते-देखते उसमें आग लग गई। आग की तपिश से जंगली होश में आया ....लेकिन तब तक मामला हाथ से निकल चुका था .....

झोपड़ी से बचकर निकलते निकलते भी जंगली 50% से ज्यादा जल चुका था। आग लगने की खबर से गांव वाले दौड़े और उन्होंने आग बुझाई। बैगा को अस्पताल पहुंचाया गया। लेकिन तीन दिन तक जीवन और मृत्यु से संघर्ष करने के बाद बैगा स्वर्गवासी हो गया। इन 3 दिनों में बुधिया ने हवेली में घुसने की तमाम कोशिश की , लेकिन वह हवेली में प्रवेश नहीं कर पाया। बुधिया रोज हवेली में चक्कर लगाता और असफल होकर वापस लौट आत। बैगा की मृत्यु के बाद वह फिर से गया लेकिन सफल नहीं हो पाया। असफलता की वजह से और क्रोधित होता गया। उसने गूलर के पेड़ पर ही अपना ठिकाना बना लिया।

बाबा ने पूजन कर लिया था जिसके बाद घर में कुछ घटना नहीं कट रही थी इसलिए दाऊजी तथा माया निश्चिंत थे | उनके दिमाग में यह जरूर था कि घर का बंधन नहीं हो पाया है। उन्हें यह आभास बिल्कुल नहीं था कि उसी प्रेत ने बाबा को निपटा दिया है। गांव वाले भी यही सोचते रहे कि यह एक दुर्घटना है। बाबा के नशे की हालत में होने की वजह से इस बात को और बल मिला कि गलती से बाबा से ही कहीं आग लग गई होगी

By Anonymous

और झोपड़ी जल गई होगी।

किसी देवता को जब नियुक्त किया जाता है तो उसे एक निश्चित अवधि के लिए संबंधित स्थान पर नियुक्त किया जाता है और उस समय तक वह देवता अपना वादा निभाता है। अपने वचन अनुसार एक हफ्ते तक रक्षा कर चुका था इसलिए देवता हवेली छोड़कर चला गया।

बुधिया रोज की तरह उस रात भी हवेली तक पहुंचा। घबराते हुए वह हवेली के पास पहुंचा तो उसे किसी प्रकार की जलन नहीं हुई। उत्साहित बुधिया तेजी से हवेली में घुस गया .....

दाऊजी माया के साथ बेडरूम में लेटे हुए थे। बुधिया ने दाऊजी को उठाकर बिस्तर से नीचे फेका और गर्दन से खींचते हुए कमरे के बाहर दालान में फेंक दिया | दाऊजी फिर बेहोश हो गए। माया तब तक जाग चुकी थी | उसने कमरे से बाहर निकलकर भागने की कोशिश की लेकिन बुधिया ने उसे दालान में दबोच लिया.....एक हफ्ते की कसर पूरी तरह निकालने के बाद 3 बजे बुधिया फिर चला गया .....

सुबह हुई और अब समस्या की गंभीरता से दोनों पति पत्नी परेशान हुए और समस्या के समाधान के क्रम में आसपास के बड़े बैगाओ को एक-एक करके बुलाया गया। बुधिया ने एक-एक करके सभी को वापसी का रास्ता दिखा दिया और 14 बैगाओं तान्त्रिकों को ऊपर रवाना कर दिया। इसके बाद बैगा समाज में भी डर बैठ गया और अब कोई भी इस समस्या के समाधान के लिए हवेली नहीं आना चाहता। इस समस्या समाधान में दाऊजी का लगभग पांच लाख रुपये खर्च हो चुका।

चमेली की वापसी

एक दिन अचानक चमेली वापस लौट आई । बुधिया इस बीच में और शक्तिशाली हो चुका था। चमेली ने वापस लौटने के साथ बुधिया को फिर से अपने नियंत्रण में लेने की कोशिश चालू कर दी। अब बुधिया को स्वतंत्र रहने की आदत हो चुकी थी। साथ ही माया की देह के साथ उसका लगाव और भी मजबूत हो चुका था। वह उसे छोड़ना नहीं चाहता था। माया के लगातार सानिध्य से जहाँ माया कमजोर होती जा रही थी । वही उसकी प्राणशक्ति खींच कर बुधिया लगातार ताकतवर होता जा रहा था।

चमेली भी शक्ति में बुधिया से कम नहीं थी। बुधिया भी जानता था कि चमेली अगर अपनी औकात पर आ जाए तो उसका बचना मुश्किल है। इसलिए वह ऐसा कोई मार्ग ढूंढने लगा जिससे उसकी स्वतंत्रता भी बरकरार रहे और माया से मिलना जुलना भी होता रहे .....

चमेली ने अपनी झोपड़ी वापस बना ली थी और उसका पूजा पाठ चालू हो गया था। झोपड़ी के जल जाने के बाद हुई बारिश ने मर्तबान में रखी हुई बुधिया की राख को बहा दिया था। जिसके चलते चमेली उसे अब कैद नहीं कर सकती थी। लेकिन यह बात सिर्फ चमेली को मालूम थी। बुधिया अब भी इस बात से भयभीत था की चमेली उसे कैद कर लेगी। बुधिया को भी यह बात समझ में आ गई थी कि चमेली का जिंदा रहना उसके लिए खतरनाक है। अगर यह जिंदा रहेगी तो उसका माया से मिलन होना संभव नहीं है .....

इधर दाऊजी के पास किसी ने चमेली के आने की सूचना दे दी। दाऊ जी को चमेली के बारे में जानकारी थी। इस प्रकार की समस्या से निजात पाने के लिए उससे बेहतर कोई नहीं हो सकता था। दाऊजी ने चमेली से मिलने की सोची और रात के दस बजे चमेली की झोपड़ी पर पहुंच गया। चमेली ने दाऊ जी का स्वागत किया। दाऊजी ने बिना लाग लपेट के सारी समस्या बता दी। चमेली सब कुछ जानते हुए भी किसी अनजान की तरह सारी बातें सुनती रही।

पूरी बात सुनने के बाद उसने समस्या समाधान के लिए सवा लाख रुपए की मांग की। दाऊजी भी तुरंत तैयार हो गए लेकिन उन्होंने शर्त रखी की पैसा काम होने के बाद दूंगा। अंततः सौदा इस बात पर तय हुआ कि पहले चमेली को पचीस हजार दिए जाएंगे और बाकी के लाख रुपये काम पूरा हो जाने के बाद दाऊजी चमेली को देंगे।

सौदा महंगा था लेकिन इसके अलावा कोई रास्ता नहीं था। लगभग सारे लोग मैदान छोड़ चुके थे और कोई भी समस्या के समाधान के लिए आगे नहीं आ रहा था। वे मरता क्या न करता वाली स्थिति में पहुंच चुके थे। ऐसी स्थिति में चमेली ने जब समस्या सुलझा देने का वादा किया तो दाऊजी को भी लगा कि वह कर पाएगी ..... लेकिन फिर भी सुरक्षा के लिहाज से उन्होंने बाद मे पैसे देने वाला विचार रखा।

चमेली के पास पचीस हजार अगले दिन पहुंचा दिए गए। चमेली ने उसी दिन से बुधिया

को कब्जे में करने की तैयारी चालू कर दी । वह इस बीच एक दिन हवेली भी हो आई । गांव वालों की नजर से बचने के लिए दाऊजी ने उसे रात में आने के लिए कहा था और गांव वालों का लिहाज करते हुए वह रात के 11 बजे हवेली पहुंची और माया से मिल कर चली गई । वह दरअसल यह देखना चाहती थी कि वह कौन है, जिसके पीछे बुधिया पागल है । माया को देखकर उसके अंदर एक सौतिया डाह भी पैदा हुई कि इसी के चक्कर मे बुधिया उससे दूर भाग रहा है ..... उसे बुधिया के दमदार जंगली संसर्ग की आदत लग चुकी थी .....उसके बिना उसे अब कुछ अच्छा नहीं लग रहा था ...

एक दिन चमेली बुधिया को अपनी झोपड़ी मे ले आई । एक लंबा अंतराल बीत चुका था । दोनों के बीच काफी लंबा साथ रहा । इसी वजह से उनमें आपस में आकर्षण भी था । इन सब के मिले-जुले प्रभाव से उनका मिलन हो गया । पहले तो बुधिया झिझका फिर सवारी चल निकली तो सारी रात चमेली के बदन की धज्जियां उडी | बुधिया की कामुकता पूरे उफान पर थी । मिलन की उस रात यह स्थिति हो गयी कि ..... चमेली ने बुधिया को रोकने की भरपूर कोशिश की ..... लेकिन बुधिया सारी रात उसे रौंदता रहा । चमेली बेहाल हो गई ..... उसे यह समझ आ गया कि अब बुधिया उसके बस की बात नहीं रहा ।

माया का आकर्षण बुधिया के अंदर इतना ज्यादा था कि वह उसके लिए सारी दुनिया से लड़ सकता था । अगली रात बुधिया फिर माया के साथ था..... लेकिन चमेली का खौफ जा ही नहीं रहा था । वह बार बार सतर्क हो जाता कि कहीं चमेली फिर न बांध लें । उसने अब चमेली को ठिकाने लगाने का तय कर लिया .....

साधना जगत में भूत प्रेत पिशाच आदि को सिद्ध करना आसान होता है । जो व्यक्ति इस प्रकार की सिद्धियां प्राप्त करता है उसका अंत बड़ा ही दुखद और भयानक होता है । यही नहीं उसकी आने वाली पीढ़ियां भी उसकी कुकृत्य का दंड भोगती है । अंत में साधक भी उसी योनि में शामिल हो जाते हैं ।

खैर....

अगली रात बुधिया चमेली की झोपड़ी तक पहुंच गया । पिछली बार चमेली ने उसे मंत्र बद्ध करके अपने साथ को मजबूर किया था । इस बार बुधिया स्वयं पहुंचा । पिछली बार के अनुभवों से भयभीत चमेली ने उसे रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन रोक नही पायी ।

आने वाले एक हफ्ते तक रोज रात के 11 बजे से लेकर सुबह 4 बजे तक चमेली के साथ वही होता जो माया के साथ होता था । एक हफ्ते में बुधिया ने चमेली के अंदर की पूरी शक्ति को निचोड़ डाला और चमेली सूख कर कांटा हो गई ।

आठवें दिन फिर बुधिया प्रकट हुआ .....

चमेली रोकती रह गई .....
लेकिन बुधिया नहीं रुका ! उसने चमेली को तब तक रौंदा जब तक सुबह नहीं हुई .....

दसवें दिन रतिक्रिया के दौरान ही बुधिया ने चमेली के प्राणों को भी खींच लिया.....

अब चमेली की शक्तियां भी बुधिया के साथ समाहित हो चुकी थी । चमेली की देह प्राणहींन हो गई थी और बुधिया 10 गुना ताकतवर हो चुका था.....

इस घटना को अब लगभग डेढ़ साल हो चुके और दोनों पति पत्नी इसे अपनी नियति मान चुके हैं। और आखरी उपाय के रूप में गांव छोड़कर जाने की योजना बना रहे हैं तभी माया की मुलाकात मुझसे हुई । भागीरथी दाऊजी को विश्वास नहीं था कि मैं यह कर सकता हूं लेकिन उनके पास भी कोई रास्ता नहीं था। कोई आने के लिए तैयार नहीं था और कुछ ना कुछ प्रयास करते रहना भी जरूरी था।

कपालनी के द्वारा सारा विवरण प्राप्त हो जाने के बाद अब मुझे तय करना था कि इस खतरनाक उपक्रम में उतरने का साहस करूं या ना करूं.....

निर्णय के लिए मैंने गुरुजी से मार्गदर्शन की अपेक्षा की और उनका मुस्कुराता हुआ चेहरा मानस पटल पर आ गया और मैं निश्चिंत हो गया कि इस समस्या का समाधान भी निकल जाएगा।

अब बारी थी उपाय ढूंढने की , जिसके लिए अपने साधना कक्ष में पहुंचना जरूरी था।

मैंने हवेली में किसी प्रकार का बंधन नहीं किया था। मैं चाहता था कि बुधिया के प्रेत को मेरे इरादों का आभास ना हो। वह रात भी माया की उसी तरह से गुजरी बुधिया रात भर उसके साथ रहा।

ब्रह्म मुहूर्त में उठना मेरी आदत थी इसलिए सुबह 4 बजे मैं उठ गया। अपने नित्य कर्मों से निवृत्त होकर लुंगी पहनकर अपने प्रातः कालीन पूजन में लग गया। ब्रह्म मुहूर्त में सभी गुरु अपने अपने शिष्यों के मानसिक संपर्क में रहते हैं। इसलिए साधना जगत में ब्रह्म मुहूर्त का समय अपने गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त करने का सबसे बढ़िया समय माना जाता है। पूजन करते करते गुरुजी का दिव्य बिंब मानस पटल पर उभरा। उन्होंने डाकिनी साधना का निर्देश दिया।

सुबह 6 बजे मेरे दरवाजे पर दस्तक हुई। दाऊजी काली चाय लेकर खड़े थे। उन्होंने बताया अभी माया उठने की स्थिति में नहीं है , इसलिए मैं आपके लिए चाय ले आया।

मैंने कहा अगर आपकी इजाजत हो तो मैं माया की हालत एक बार देखना चाहूंगा। उन्होंने कहा कि मैं उसे देख कर आता हूं, फिर आपको लेकर चलूंगा।

दाऊजी माया के कमरे की ओर बढ़ चले | उनके हाथ में माया के लिए भी चाय थी। कमरे में पहुंचकर उन्होंने देखा तो माया कपड़े पहन रही थी | उन्होंने उसे चाय दी और मेरे मिलने की इच्छा के बारे में बताया।

माया दर्द से बेहाल थी | लेकिन शायद छुटकारा मिलने की कोई संभावना उसे दिखी होगी

By Anonymous

| उसने मिलने के लिए हामी भरी। दाऊजी मेरे कमरे में आए और मुझे इस संबंध में बताया | मैं उठकर माया के कमरे में गया। उसकी हालत ऐसी थी जैसी कई मील की दौड़ लगाकर आ रही हो। हाथ का जो हिस्सा गाउन से बाहर दिख रहा था | उसमें लाल नीले निशान मौजूद थे। जो रात की कहानी बता रहे थे। होंठ सूजे हुए थे और आंखें फूली हुई। उसे देख कर मुझे बहुत दुख हुआ, मैंने इजाजत ली और घर पहुंच कर फोन करने की बात कही।

जहां माया की आंखों में याचना छलक रही थी वही दाऊजी की आंखों में अविश्वास साफ झलक रहा था उनको लग रहा था कि मैं गया तो वापस नहीं लौटूंगा।

खैर .....

डाकिनी साधना

डमरु दाऊजी की गाड़ी में मुझे घर तक छोड़ गया । सुबह 7 बजे मैं घर पहुंच गया था। उस दिन मोहर्रम की छुट्टी थी इसलिए ऑफिस जाने की जरूरत नहीं थी। मुझे डाकिनी देवी को प्रसन्न करने की प्रक्रिया चालू करनी थी ,ताकि वह मेरी सहायता करें और मैं बुधिया वाली समस्या से माया को आजाद करा सकूं।

डाकिनी मसान की देवी है। सृष्टि की मूल शक्ति महाकाली की प्रमुख गणिकाओं में आती है। यह साधना शमशान मे ही की जाती है। मैं ऐसे भी अक्सर शमशान आता जाता रहता था। इसलिए वहां के लोग भी मुझे जानते थे। आज बाबा से खासतौर से मिलना था। यह पहला अवसर था जब मुझे इस प्रकार की घटना से दो-चार होना पड़ा था । डाकिनी साधना उसके प्रयोग के बारे में बाबा से परामर्श लेना चाहता था।

इससे पहले मुझे अपने साधना कक्ष में बैठकर अपनी रक्षा तथा बंधन के लिए महाकाली के मंत्रों का जाप करना था। जितनी बड़ी बाधा या समस्या होती है उसके समाधान के लिए जाते समय उतने ही तगड़े प्रहार की संभावना भी आती है। इसलिए हर तांत्रिक जब किसी समस्या के समाधान की बात सोचता है तो उसका पहला कर्तव्य है कि वह अपनी रक्षा करने की व्यवस्था करें। एक हल्की सी चूक भी जानलेवा हो सकती है। जंगली बाबा के प्रकरण में वह सक्षम था कि बुधिया को बांध लेता लेकिन नशे की अधिकता और अति आत्मविश्वास ने उसकी जान ले ली।

लगभग 9 बजे में अपने पूजन कक्ष में घुसा और मंत्र जाप में लग गया। डाकिनी साधना महाकाली साधना के अंतर्गत की जाती है इसलिए महाकाली के मंत्रों का जाप कर लेने से उनकी कृपा जल्दी प्राप्त हो जाती है। यह बात मुझे मालूम थी , इसलिए मैंने काली बीज मंत्र “क्रीं” का 108 माला जाप किया और 11 माला मंत्रों के साथ काली मिर्च की आहुतियां भी दीं।

अपने आराध्य का मंत्र जाप कर लेने से आमतौर पर किसी प्रकार की तांत्रिक विद्या का प्रभाव नहीं होता है ।

जितनी कहानियां बुधिया के प्रेत के बारे में मुझे पता चली थी उसके बाद कहीं ना कहीं मैं भी अंदर से थोड़ा सा भयभीत अवश्य था। इस सारे उपक्रम में मुझे लगभग 4 घंटे लगे। चार घंटे के बाद मैं अपने आसन से उठा। माता जी को प्रणाम किया, गुरुजी से अनुमति लेकर बाहर निकला।

अगला कदम था डोम बाबा से चर्चा करना कि इस समस्या के समाधान को किस प्रकार से आगे ले जाना है। जैसा की आप लोगों को पता ही होगा कि डोम बाबा शिवनाथ नदी के पास स्थित शमशान में काम करते हैं। वह मेरे गुरु भाई भी है। अपनी वास्तविकता को वह छुपा कर रखता है। इसके चलते कोई उसके बारे में नहीं जानता है। अपने साधना के कालखंड में मुझे उनकी शक्तियों और साधनात्मक क्षमताओं का एहसास हो चुका था। गुरु

भाई होने के नाते वह हमेशा मेरा मार्गदर्शन करते थे।

लगभग 2 बजे मैं श्मशान पहुंचा। बाबा काली मंदिर के सामने चबूतरे पर लेटे हुए थे। मेरे कदमों की आहट सुनते ही उन्होंने कहा - तू आ गया। मैं प्रतीक्षा कर रहा था....

मैंने उन्हें पूरी बात बताई। उन्होंने डाकिनि साधना की जानकारी और उसके प्रयोग की विधि समझाई।

अब दिक्कत यह थी कि यह प्रयोग रात के 9 बजे के बाद श्मशान में ही हो सकता था। मैंने मसान से ही भागीरथी जी को फोन लगाया और पूछा कि क्या गांव के श्मशान में रात को बैठने की अनुमति मिल सकती है ? गांव वालों को किसी प्रकार की आपत्ति तो नहीं होगी ?

गांव में भीड़ तंत्र चलता है। अगर किसी ने यह कह दिया कि यह गांव के बुरे के लिए कुछ उल्टा सीधा कर रहा है। तो फिर जान बचना मुश्किल है। इसलिए गांव के श्मशान में साधना करना बड़ा ही खतरनाक है।

दाऊजी सरपंच रह चुके थे और उनकी गांव में अपनी पकड़ थी। किसी प्रकार की समस्या होने पर उसे संभाल सकते थे इसलिए उन्होंने इसके लिए हामी भरी।

यह तय हुआ कि घोड़ा टोला के श्मशान में ही रात 9 बजे के बाद डाकिनी प्रयोग किया जाएगा। प्रेत को बंधन में लाने के लिए प्रयास किया जाएगा।

डाकिनी साधना में सफलता मिलेगी तो कार्य सिद्धि सौ प्रतिशत निश्चित है | लेकिन यदि किसी कारणवश असफलता मिले तो साधक पागल हो सकता है या मर भी सकता है। यह एक प्रकार से दो धारी तलवार थी जिस पर चलना था। साधना की आवश्यक सामग्री की व्यवस्था करने के लिए दाऊजी को मैंने कह दिया था।

डोम बाबा से इजाजत लेकर मैं घर लौट आया। रात को फिर जागना था। इसलिए एक नींद ले लेना जरूरी लगा। मैं अपने बिस्तर पर लेटा और नींद ने मुझे अपने आगोश में समेट लिया। 6 बजे मेरी नींद खुली। नहा धोकर फ्रेश हुआ पूजन का समय हो चुका था। दैनिक पूजन संपन्न किया और बरामदे में अपने सामान के साथ बैठ गया। दाऊजी की गाड़ी मुझे लेने आने वाली थी। शाम 7 बजे के आसपास गाड़ी पहुंच जाएगी ऐसा दाऊ जी ने कहा था....

ठीक सवा सात बजे दाऊजी की गाड़ी मेरे घर के सामने लग गई। गाडी में डमरु बैठा हुआ था। मैंने अपना तांत्रिक झोला उठाया और गाड़ी में बैठ गया। सबसे पहले डाकिनी को प्रसन्न करना आवश्यक था। गाड़ी में ही सारी सामग्री रखी हुई थी। डमरु ने गाड़ी सीधे श्मशान में रोकी।

घोडाटोला का मसान और डाकिनी

उस समय रात के 8:30 बज चुके थे । घोड़ा टोला का मसान घाट गांव से सबसे आखरी छोर पर था । दूर तक फैले हुए खेतों के बीच से रास्ता गुजरता था | आखरी लगभग 500 मीटर आम के बगीचे के बीच से गुजर ना होता था । आमतौर पर रात के वक्त उधर कोई नहीं जाता था ।

वहां लकड़ी आदि बेचने के लिए एक दुकान थी । जिसका मालिक डमरु का चाचा खोरबहरा था । इसलिए वहां किसी प्रकार की दिक्कत आने की संभावना नहीं थी । अब समय बदल गया है और मसान साधना करना पहले इतना आसान नहीं है ।

मसान घाट पर पहुंचने के बाद मैंने मसान घाट का चक्कर लगाने का निर्णय लिया । डमरु और खोरबहरा को दरवाजे पर चौकीदारी में बैठाकर मैंने मसान घाट का एक चक्कर लगाया ।

उस दिन मसान घाट में सिर्फ एक चिता जली थी । सौभाग्य से वह एक महिला की चिता थी । जो डाकिनी साधना के लिए अत्यंत उपयुक्त स्थिति थी । चिता की आग अभी हल्की-हल्की सुलग रही थी ।

डाकिनी भी एक प्रकार की अघोर साधना ही है । इसलिए दिगंबर अवस्था में बैठकर मैंने मंत्र जाप प्रारंभ किया । इसके पहले चिता के चारों तरफ सुरक्षा घेरा तथा अन्य साधनात्मक आवश्यकताएं पूरी की । क्षेत्रपाल द्वारपाल सहित देवताओं को बलि तथा भोग प्रदान किया ।

मंत्र प्रारंभ होने के साथ वातावरण में भारीपन बढ़ता गया । 21 माला का जाप होना था और वह भी नाग सांप की अस्थियों से बनी माला से । सर्प की हड्डी में बीच में छेद होता है | इसमे से धागा डालकर माला बनाई जा सकती है | इसमे यह ध्यान रखना होता है की सर्प स्वयम मरा हो मारे हुए सर्प का उपयोग नहीं किया जा सकता है | उससे सिद्धि नहीं मिलती है |

चिता और मेरे आसन के चारों ओर सुरक्षा घेरा बना हुआ था | मसान साधनाएं विशेष रूप से उच्च शक्तियों की, की जाती है तो पहले शमशान जागृत किया जाता है । जब शमशान जागृत होता है तो अंदर स्थित समस्त शक्तियां जागृत होकर बाहर निकल आती हैं । यह सारी शक्तियां उस साधक को बरगला कर अपने स्थान से हटाने की कोशिश करती हैं । इस परीक्षण से निकल जाने के बाद ही उच्च स्तर की शक्तियां सामने प्रकट होती है । जिस घेरे में मैं बैठा था उसके बाहर चित्र विचित्र आकृतियाँ मेरी ओर झपाटा मारती खड़ी थीं लेकिन वे सुरक्षा घेरा नहीं पार कर पा रही थीं | ये सब डाकिनी की सहयोगी शक्तियाँ थीं जो साधक का परीक्षण करती रहती हैं और कमजोर साधक को समाप्त भी कर देती हैं |

इनमें से सभी का स्वरूप एक से एक भयानक था । एक स्त्री का शरीर लगभग 10 फीट ऊंचा था लेकिन उसकी मोटाई मुश्किल से 6 इंच की थी । एक और स्त्री डामर की तरह

काली थी, केवल उसके दांत दिखाई दे रहे थे। एक स्त्री ऐसी भी थी जो अप्सरा से कम नहीं लग रही थी। यह सारी स्त्रियां निर्वस्त्र थी। मसान की शक्तियां सभी बंधनों से मुक्त होती है। सुंदर स्त्री ने अपनी सुंदर देह को अलग अलग तरीके से दिखाया और विचलित करने का हर संभव प्रयास किया। उसने ऐसी ऐसी मुद्राएं दिखाईं जिसे अगर कोई सामान्य पुरुष देख ले तो किसी हालत में अपने आप को ना रोक पाए।

लगभग 15 से 20 मिनट तक शक्तियों की लीला चलती रही….

मेरा मंत्र जाप भी साथ में चलता रहा…..

इसके बाद अचानक ऐसा लगा जैसे तूफान आने वाला है। बेमौसम बारिश शुरू हो गई। बिजली कड़कने लगी और हवाएं तेजी से चलने लगी।

एक चक्रवात जैसा मसान के कोने से उठा और तेजी से मेरी तरफ बढ़ा। चक्रवात जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाता था रास्ते में पड़ने वाली सारी चीजों को उखाड़ कर अपने में समाता जा रहा था। मसान घाट के अंदर पड़े हुए बांस के टुकड़े , मटकी के टुकड़े, पुराने तकिए, गद्दे, सब उस चक्रवात के अंदर घूम रहे थे। वह मेरी तरफ बढ़ रहा था।

इस प्रकार की साधना में या तो सफलता मिलती है या फिर साधक को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ती है। इस प्रकार की साधना को बीच में छोड़ने का मतलब भी मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। इसलिए भयभीत होने के बावजूद आसन पर पूरी ताकत के साथ में बैठा हुआ था।

वह चक्रवात मेरी तरफ तेजी से बढ़ रहा था। जिस चिता के पास में बैठा था वह एक प्लेटफार्म के ऊपर बना हुआ था। जिसके ऊपर शेड भी था। वह शेड टीन के चादरों से बना हुआ था। वह चक्रवात बढ़ते बढ़ते प्लेटफॉर्म के पास तक आ गया और उसके चारों तरफ चक्कर लगाने लगा।

धीरे धीरे यह स्थिति हो गई कि वह प्लेटफार्म उस चक्रवात के अंदर था और प्लेटफॉर्म के चारों और चक्रवात जोर जोर से घूम रहा था। प्लेटफॉर्म के ऊपर के शेड की फड़फड़ाने की और टकराने की आवाज आ रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह शीट अब टूटा और तब टूटा। शेड के नीचे जो स्ट्रक्चर बना हुआ था वह लोहे के एंगल का था ,अगर उसमें से एक भी टुकड़ा टूट कर सर पर गिरता तो बचना मुश्किल था। मेरे पास कोई उपाय नहीं था। सिवाय इसके कि अपने आसन पर बैठकर अपनी साधना को पूर्ण करूँ।

मंत्र जाप बढ़ता गया और उसके साथ चक्रवात की गति बढ़ती गई। कुछ समय के बाद ऊपर लगा हुआ शेड भी उखड़ कर चक्रवात के साथ घूमने लगा। एंगल के टुकड़े मेरे आजू-बाजू गिरने लगे।

तभी…..एक टुकड़ा सीधे चिता के बीच में आकर भाले की तरह गिरा। यह सोच कर मेरे प्राण हलक में आ गए कि अगर वह एंगल मेरे सर पर गिरता तो अभी मैं स्वर्गवासी हो गया

होता।

कुछ ही समय में छज्जा पूरा का पूरा गायब हो चुका था। ऊपर की ओर देखने से केवल चक्रवात की हवा और धूल का बादल दिखता था। साथ ही आसमान में चांद की हल्की रोशनी दिखती थी।

प्लेटफार्म के चारों तरफ लगे हुए खंबे अब हिलने लगे थे। चारों खंबे भी कुछ देर में टूट कर गिर गए। शुक्र यह था कि वे बाहर की तरफ गिरे,अंदर की तरफ नहीं। खंभों के गिरने के बाद प्लेटफार्म के ईट पत्थर भी उखड़ने लगे। वह पत्थर आकर मुझसे बीच-बीच में टकराते। कोई पत्थर पीठ पर टकराता, कोई कंधे पर, तो कोई सर पर। हर टकराव के साथ शरीर में भयंकर पीड़ा होती। मेरा पूरा शरीर हिल जाता, लेकिन थोड़ी देर में संभल कर फिर मैं मंत्र जाप करने लगता।

मेरे शरीर का शायद ही कोई हिस्सा हो जहां पर पत्थर की चोट ना लगी हो। चिता और उसके आसपास पत्थरों का ढेर लग गया था। प्लेटफॉर्म जो पहले 8 फुट बाई 4 फुट का था अब टूट कर 6 फुट बाई 3 फुट का रह गया था। मेरे शरीर के कई हिस्सों से खून बह रहा था और भयंकर पीड़ा हो रही थी।

यह क्रम लगभग आधा पौन घंटे चला। इसके बाद वह चक्रवात सिमटा और उसी चिता में समा गया। चिता में पड़ी हुई लकड़ियां इधर-उधर बिखर गई। कुछ जली हुई लकड़ी और अंगार मेरे ऊपर भी आकर गिरे , लेकिन सौभाग्य रहा कि निर्वस्त्र होने की वजह से शरीर के कपड़ों में आग नहीं लगी। अगर कपड़ों में आग लग जाए तो जलने से बचना बहुत मुश्किल होता है।

चक्रवात की चिता में समा जाने के बाद जो अंगारों की वर्षा हुई उसमें एक काले रंग का कड़ा भी उछल कर मेरी तरफ आया जो लगभग मेरी कलाई की साइज का था। यह उन शक्तियों की तरफ से शायद मुझे वरदान था। मैंने उसे उठाकर अपने दाहिने हाथ में पहन लिया। अब उस मशान का माहौल लगभग शांतिपूर्ण हो चुका था। शायद शक्तियां संतुष्ट हो चुकी थी ।

बाकी मंत्र जाप बिना किसी व्यवधान के संपन्न हुआ। इस सारे ताम झाम के बीच ना तो डमरु अंदर आया और नहीं खोरबहरा। मैंने दोनों को मना किया हुआ था कि जब तक मैं खुद से बाहर ना आऊं तब तक अंदर मत आना। अगर ऐसा किया तो तुम्हारी मौत का जिम्मेदार मैं नहीं होऊंगा। दोनों गांव के लोग थे और बातों की गंभीरता को समझते थे इसलिए वह बाहर ही बैठे रहे।

जाप पूर्ण होने के बाद चिता से बेहद भयानक स्वरूप वाली मानव आकृति प्रकट हुई उसके प्रकट होते ही मैंने भोग पदार्थ और भोग द्रव्य प्रदान किया | बुधिया से माया को मुक्त कराने की याचना की | आशीर्वाद मे उनका हाथ उठा | मैंने दंडवत प्रणाम किया | शमशान जागरण के अंत में शांति करना भी अत्यंत आवश्यक होता है। मेरा कार्य संपन्न हो चुका

By Anonymous

था। मैंने श्मशान शांति का मंत्र पढ़ा और वातावरण वापस शांत हो गया।

बुधिया की आखिरी रात

इसके बाद चिता भस्म से अपने माथे पर त्रिपुंड बनाया। चिता को दंडवत प्रणाम किया कार्य संपन्नता के लिए आशीर्वाद मांगने के बाद मैंने अपने वस्त्र पहने।

इसके बाद मै सारी सामग्री समेटकर तेज कदमों से बाहर निकल आया | मेरी हालत देखकर दोनों बहुत कुछ पूछना चाहते थे लेकिन मेरे चेहरे की भंगिमा देखकर उनका साहस नहीं हुआ। उस समय कुछ बोलना भी उचित नहीं था।

डमरु ने गाड़ी तैयार रखी थी | मेरे चढ़ते ही गाड़ी हवेली की ओर चल पड़ी | हवेली पहुंचते-पहुंचते रात के 11 बज चुके थे |

हवेली के अंदर मेरे होने से बुधिया को आभास हो जाता तो हमारा काम मुश्किल हो जाता इसलिए मैं हवेली से बाहर ही रहा | इसके लिए डमरू की झोपड़ी जो हवेली के बाहर थी एक बेहतर जगह थी | मैं झोपड़ी में ध्यान लगा कर बैठ गया | मैंने मंत्रों के माध्यम से झोपड़ी को बांध दिया था कि कोई बाहरी शक्ति उसे देख ना सके लेकिन इसमें गड़बड़ यह थी कि मैं भी बाहर की चीजों को नहीं देख सकता था। डमरु के पास फोन था उसे मैंने झोपड़ी के बाहर खड़े रहने को कहा और संकेत मिलने पर मुझे खबर करने का निर्देश दिया।

लगभग 12:15 बजे बुधिया हवेली में दाखिल हुआ | दाउजी को यह समझ आ चुका था कि बुधिया उनके बस का नहीं है | इसलिए वह माया के कमरे में सोना बंद कर चुके थे और अपने अलग कमरे में सोते थे | इसलिए बुधिया पूरी निश्चिंतता के साथ आता था और माया के कमरे में घुस कर अपनी मनमानी कर के निकल जाता था | यह प्रक्रिया काफी दिनों से चल रही थी | इसलिये अति आत्मविश्वास से भरा बुधिया अन्य दिनों की तरह सीधे माया के कमरे में प्रवेश कर गया |

माया को भी मालूम था कि बुधिया सारे कपड़े फाडेगा। इसलिए वह भी गाउन पहनकर सोती। विवशता की यह पराकाष्ठा थी। बुधिया ने गाउन उतार फेंका और अपनी प्रक्रिया चालू कर दी | फिर माया का कमरा अखाड़ा बन गया।

दाऊजी को हमने पहले ही इस बात के लिए राजी कर लिया था कि जब बुधिया कमरे में घुस जाए तो वह हमें संकेत कर दे | दाऊजी ने मोबाइल पर मिस कॉल मार कर अपना संकेत दे दिया | उसने दरवाजा खटखटा कर मुझे संकेत दिया.....

मैंने हाथ में द्रव्यपात्र लेकर संकल्प लिया और डाकिनी को समर्पित कर दिया | हाथ मे रखा द्रव्यपात्र धीरे-धीरे करके खाली हो गया अर्थात भोग ले लिया था | भोग ले लेने का मतलब यह था कि कार्य का होना लगभग तय है।

डाकिनी देवी के भोग ग्रहण करने के बाद तेजी से हवेली की ओर हवा का गोला सा बढा |

यह डाकिनी थी | हवेली के दरवाजे को फाड़ती हुई डाकिनी घर में प्रवेश कर गई |

जब तक बुधिया संभलता तब तक डाकिनी ने उसे दबोच लिया | हवा का वह बवंडर नुमा गोला तेजी से घूमता हुआ दालान मे आया | कुछ देर वहीं घूमता रहा | वहाँ पड़ी चारपाई और कुर्सी समेत तमाम चीजें उसकी चपेट मे आकर टूट गईं | फिर वह गोला आसमान की ओर उड़ा और फिर अन्तरिक्ष मे चला गया | बुधिया वापस लौट चुका था | इतर योनियों की अधिष्ठात्री डाकिनी ने उसे वापस खींच लिया था | अब वह एक ऐसी यात्रा पर निकल चुका था जिसका कोई अंत नहीं था |

इस घटना के बाद माया लगभग 6 महीने में वापस सामान्य हो गई | इस घटना के बाद मेरा आत्मविश्वास भी बढ़ गया | यह अनुभव भविष्य में इस प्रकार के अन्य समस्याओं के समाधान में काम आने वाला था | मुझे यह संतोष रहा कि मैं उस महिला की सहायता कर पाया।

गुरुदेव और महामाया की कृपा से मैं इस गंभीर परिस्थिति से निकल पाया |

जय महाकाल
जय महाकाली

श्री सदगुरु चरणार्पणम

अनिल शेखर "अमस"

अन्य रचनाएँ :-
1. तांत्रिक अघोरानंद।
2. अघोरानंद की अप्सरा।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य।
6. अघोरानंद और छाया की माया।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।

By Anonymous

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here